Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र
terapanthtimes.com

अपने मत की प्रशंसा करने वाले कहते हैं-अपने-अपने सांप्रदायिक अनुष्ठान में ही सिद्धि होती है, दूसरे प्रकार से नहीं होती।
- आचार्य श्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 25 • अंक 45 • 12 अगस्त - 18 अगस्त, 2024 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 10-08-2024 • पेज 16 ₹ 10 रुपये

"बेटी तेरापंथ की-दामाद तेरापंथ के" सम्मेलन का आयोजन

स्वयं अभय रहते हुए दूसरों को अभयदान देने का प्रयास करें : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।
4 अगस्त, 2024

शांतिदूत आचार्य श्री महाश्रमण जी ने सम्पूर्ण श्रावक समाज को प्रेरणा देते हुए फरमाया कि चातुर्मास के अंतर्गत विभिन्न सम्मेलनों का आयोजन होता है उसमें से एक है- 'बेटी तेरापंथ की'। तेरापंथ धर्म संघ की सर्वोच्च संस्था 'संस्था शिरोमणि' तेरापंथी महासभा द्वारा आयोजित 'बेटी तेरापंथ की' का यह द्वितीय वर्ष है, इससे पहले इसका आयोजन मुंबई चातुर्मास में हुआ था। इस वर्ष इस सम्मेलन के अंतर्गत देश-विदेश से बेटियों और दामादों का आना हुआ है और लगभग 1500 के करीब इनका रजिस्ट्रेशन हुआ है। इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य स्नेह, संस्कार और समन्वय है।

आचार्यप्रवर ने फरमाया कि सम्मेलन का नाम 'बेटी तेरापंथ की' है लेकिन इसके साथ एक गर्भित बात है- 'दामाद तेरापंथ के'। प्रायः 4000 से अधिक बेटियां इस कार्यक्रम से जुड़ चुकी हैं। गुरुदेव ने मंगल उद्बोधन में कहा कि बेटियों के साथ दामाद, नाती, नातिन का जुड़ाव भी इस सम्मेलन से हुआ है। यह धार्मिक संदर्भ से जुड़ा हुआ कार्यक्रम है। जिन बेटियों ने तेरापंथ धर्म संघ के अंतर्गत जन्म लिया और जिनका विवाह अन्य संप्रदाय में हुआ है, वे इसके अंतर्गत आते हैं। सम्मेलन में समागत बेटियों और दामादों को आशीर्वचन देते हुए पूज्य प्रवर ने कहा कि सभी में आध्यात्मिक सुख शांति का भाव बना रहे और जहां पर भी रहें धार्मिक और आध्यात्मिक क्षेत्र में कार्य करते रहें। सब में मैत्री भाव बना रहे, नशा मुक्ति रखें और आगे पर्युषण पर्व आ रहा है उसका लाभ लेने का प्रयास करें।

इससे पूर्व मंगल प्रवचन में जन-जन का उद्धार करने वाले युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने महावीर समवसरण में फरमाया कि सामान्यतया मनुष्य में अभय रहने की भावना रहती है। प्रश्न हो सकता है कि मनुष्य को भय किससे लगता है? आयारो आगम में उत्तर मिलता है कि मनुष्य के भय का मूल कारण दुःख है। कोई भी मनुष्य स्वयं के लिए कष्ट नहीं चाहता, मनुष्य मुख्य रूप से दुःख से डरता है। वह बीमारी, अपमान, डकैती, चोरी और अपने जीवन की रक्षा को लेकर डर सकता है।

आगम में लिखा गया है कि सभी सांसारिक जीवों को अभय की कामना होती है। इसके लिए मनुष्य को यह प्रयास करना चाहिए कि वह ना किसी से डरे और ना किसी को डराए।

(शेष पेज 13 पर)

अनावश्यक हिंसा से बचने का हो प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।
3 अगस्त, 2024

युगनायक युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी की पावन सन्निधि में आज त्रि-दिवसीय उपासक सेमिनार एवं 'बेटी तेरापंथ की' का द्वितीय दो दिवसीय सम्मेलन का शुभारंभ हुआ। धर्मोपदेशक आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आगम वाणी की अमृत वर्षा करते हुए फरमाया- आयारो के प्रथम अध्ययन में कहा गया है- हमारी दुनिया में अनंत जीव है। सिद्ध तो मुक्त हैं, उनकी हिंसा नहीं हो सकती, हिंसा तो संसारी जीवों की ही होती है। शरीर का छेदन-भेदन हो सकता है, आत्मा अछेद्य, अदाह्य, अमर-अविनाशी है।

हमारी दुनिया में स्थावर व त्रस जीव भी हैं। केवलज्ञानी मनुष्य अनींद्रिय भी कहलाते हैं। केवलज्ञानी इंद्रियातीत होते हैं, वे आत्मा से, भीतर से देखते हैं, जानते हैं। केवलज्ञानी मनुष्य क्षयोपशम रूप इंद्रियों के नहीं होने के कारण अनींद्रिय कहलाते हैं। हम संसारी जीवों को ज्ञान प्रदान कराने वाली इन्द्रियां होती है।

संसारी जीवों की हिंसा हो सकती है। स्थावर और त्रस जीवों की हिंसा हो सकती है। स्थावर जीवों में तेजस्काय की हिंसा के संदर्भ में आगम में कहा गया है- जो प्रमत्त, प्रमादी, विषयालोलुप अग्निकाय के जीवों की हिंसा करता है, वह दण्ड कहलाता है। अर्थात् वह अपनी आत्मा को दंडित करता है। खाना बनाना, सर्दी में अलाव जलाना, पटाखे जलाना आदि अग्निकाय के जीवों की हिंसा है। कहीं आवश्यक रूप में हिंसा हो सकती है तो कहीं विषय लोलुपता के कारण या मनोरंजन से अनावश्यक हिंसा होती है। आदमी को यह प्रयास करना चाहिए की सभी जीवों के प्रति अहिंसा का भाव हो और अनावश्यक हिंसा से बचने का प्रयास हो।

आयारो में सुन्दर सूत्र दिया गया है कि साधु ने जो प्रमाद स्वरूप अतीत में जो हिंसा जैसा पाप किया है, मैं अब वह नहीं करूंगा, अब मैं अहिंसक बन गया हूं। स्थावरकाय के जीवों की हिंसा को हिंसा माना गया है। भले उनका साक्षात जीवत्व प्रतीत ना हो, जैनिज्म में पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और वनस्पति को सजीव बताया गया है। चार शब्द हैं- प्राण, भूत, जीव और सत्व। द्विंद्रीय, त्रिंद्रिय और चतुरेंद्रिय जीवों की संज्ञा प्राण है, वनस्पतिकाय के जीव भूत कहलाते हैं, पंचेन्द्रिय जीव कहलाते हैं, शेष पृथ्वीकाय, अप्काय, तेजस्काय और वायुकाय सत्व कहलाते हैं। इन सभी के प्रति हम अहिंसा की भावना रखें। गृहस्थ छोटे-छोटे जीवों की हिंसा से बचने का प्रयास करे। जमीकन्द के भक्षण से बचें।

आज चतुर्दशी हाजरी का दिन है। परिषद् में इसका वाचन करने से श्रावक-श्राविकाओं को भी हमारी मर्यादा का ज्ञान हो सकता है। पूज्यवर ने हाजरी का वाचन कराते हुए शिक्षामृत प्रदान करवाया। हम साधु-साध्वियों के लिए हिंसा करने के आजीवन त्याग होते हैं। नवदीक्षित साध्वियों ने लेखपत्र का वाचन किया। पूज्यवर ने छहों साध्वियों को 21-21 कल्याणक बख्शाये।

(शेष पेज 13 पर)

अहिंसा की साधना के लिए जानें जीव और अजीव को : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।
2 अगस्त, 2024

ज्ञान चेतना को विकसित करने वाले युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आयारो आगम के प्रथम अध्ययन की अमीवर्षा कराते हुए फरमाया- अहिंसा की साधना के लिए यह भी जानना अपेक्षित है कि जीव कौन है, अजीव कौन है? जब तक यह पता नहीं है तो जीवों के प्रति अहिंसापूर्ण व्यवहार कितना और कैसे हो सकता है?

जैन वांग्मय में षट् जीव निकाय का उल्लेख मिलता है। इन छः जीव निकायों को जान लिया जाता है, तो व्यक्ति हिंसा से बच सकता है। जीव दो प्रकार के हैं- एक वे जीव जिनका सुबोध प्रत्यक्ष जाना जा सकता है, दूसरे वे जिनका बोध प्रत्यक्ष जाना नहीं जा सकता। स्थावर काय के जीवों को प्रत्यक्ष जान लेना कठिन है। वनस्पति काय को थोड़ा जाना जा सकता है। पृथ्वी, हवा, पानी, अग्नि सजीव है पर वह प्रत्यक्ष नहीं है।

जिनको हम प्रत्यक्ष रूप में जीव नहीं जान सकते तो हम आगम की वाणी को मान लें। इनकी हिंसा से हम बचें, इनकी अहिंसा के प्रति जागरूक रहें। थोड़े से पानी में असंख्य जीव हो सकते हैं। अप्काय के जीव दिखाई नहीं दे सकते। सचित्त पानी तो स्वयं जीव है। पानी में जो दिखते हैं, वे तो त्रसकाय के जीव या पुद्‌गल हो सकते हैं। इन छोटे स्थावर जीवों को भी अभय बना दें। साधु से भी अप्काय की द्रव्य हिंसा हो सकती है। जीवन चलाने में द्रव्य हिंसा से भी बचने का प्रयास करें। उपासक भी पानी का संयम कर सकते हैं। गृहस्थ भी लक्ष्य रखे तो थोड़े पानी में अच्छी सफाई हो सकती है। पानी का अनावश्यक प्रयोग न हो। जीवों को अभय बनाने का प्रयास करें।

ऊपरला व्याख्यान के अंतर्गत पूज्य प्रवर ने 'नीति रो प्यालो' आख्यान का विवेचन किया।

मुनि मेधावीकुमारजी ने पूज्य प्रवर से 15 की तपस्या के प्रत्याख्यान किए। अनेकों श्रावक श्राविकाओं ने अठाई, 13, 15 आदि तपस्या के प्रत्याख्यान किये।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्वावधान में उपासक प्रशिक्षण शिविर के मंचीय कार्यक्रम में जयंतिलाल सुराणा ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। शिविरार्थी दीक्षित बाफणा ने शिविर के अनुभवों की प्रस्तुति दी। महासभा के महामंत्री विनोद बैद ने अपने विचार व्यक्त किए एवं उपासक श्रेणी परिचय व प्रतिवेदन पुस्तिका 2023 पूज्यवर को समर्पित की गई।

पूज्यवर ने आशीर्वचन फरमाते हुए कहा कि उपासक श्रेणी और शिविर का प्रसंग है। परम पूज्य गुरुदेव तुलसी के आचार्य काल में कई नये उन्मेष व गतिविधियां सामने आई थी। यह उपासक संघ या उपासक श्रेणी उन्हीं में से एक है। प्रारम्भ में तो उपासक श्रेणी छोटा-सा था, वह बढ़ते-बढ़ते विस्तार को प्राप्त हुआ है। केवल संख्या का ही नहीं मानों मैनेजमेंट का भी परिष्कार-विस्तार हुआ है। अब तो शिविर का भी परिष्कृत रूप हो गया है। गुणवत्ता भी महत्वपूर्ण बात होती है। वर्ष में जितना समय मिले, जितनी अनुकूलता हो, व्यक्तिगत विकास होता रहे। शिविर में भी विकास हो सकता है। गंगाशहर व लाडनूं में जैन विश्व भारती में भवन की संभवतः बात है, वहां पर भी ट्रेनिंग का क्रम चलता रहे। स्वाध्याय-अध्ययन का सघन क्रम चलता रहे। भाषण की ट्रेनिंग मिले, राग-रागिनियों को भी धराया जा सकता है। ट्रेनिंग होती रहे, साथ में साधना भी चलती रहे। जहां संथारे होते हैं, वहां पर उपासक सहयोग करा सकते हैं। उपासक पर्युषण में तो जाते ही हैं। स्थानीय स्तर पर भी शेषकाल में भवनों में व्याख्यान चलता रहे। शनिवार की सामायिक करायी जा सकती है। धार्मिक-आध्यात्मिक सेवा देते रहें। अपना खुद का विकास करते रहें। कई निवृत्त होते हैं तो संख्या में कई प्रवृत्त भी हों। जैसे जितने जीव मोक्ष में चले जाते हैं, उतने जीव अव्यवहार राशि से व्यवहार राशि में आ जाते हैं। प्रेरणा देने से लोगों को उपासक श्रेणी की तरफ आकर्षित करने का प्रयास किया जा सकता है। जीवनदानी-समयदानी उपासक बनें। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

शक्ति होने पर भी वार नहीं करना महावीरता है : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।
01 अगस्त, 2024

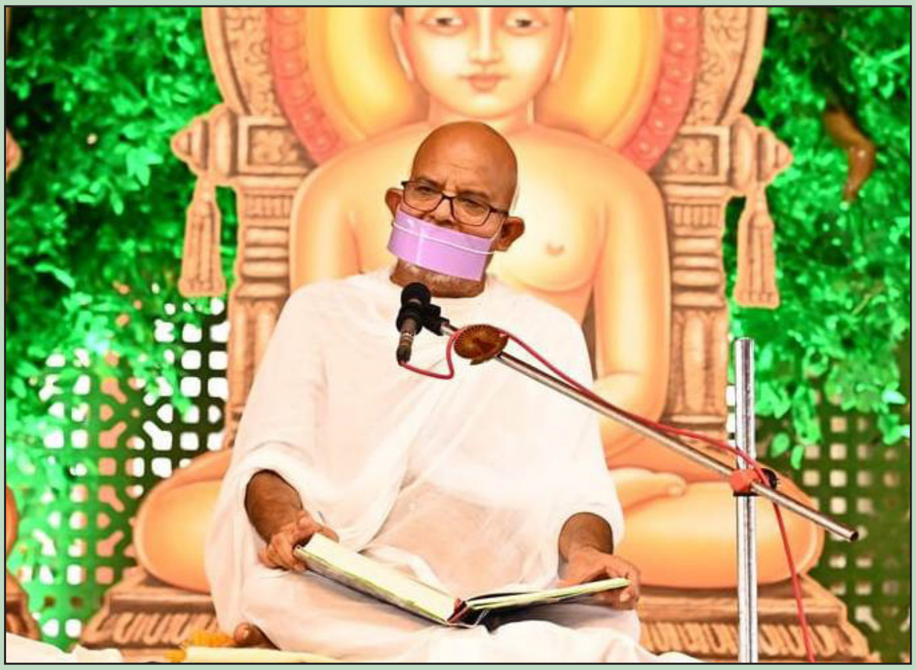

अष्टगणी सम्पदा से सुशोभित, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आर्षवाणी की व्याख्या कराते हुए फरमाया कि आयारो आगम के प्रथम अध्ययन में अहिंसा के संदर्भ में कहा गया है- अहिंसा का मार्ग एक महान मार्ग है। दो मार्ग है- हिंसा और अहिंसा। हिंसा से दुःख प्रसूत होते हैं। अहिंसा के मार्ग पर चलने से दूसरों को दुःख नहीं होता और स्वयं को भी शांति मिलती है। अहिंसा के मार्ग पर हर कोई समर्पित नहीं होता। जो पराक्रमशाली वीर होते हैं, वे इस पथ पर समर्पित होते हैं।

हिंसा में भी कुछ वीरता की बात हो सकती है। युद्ध में जो लड़ता है, उसमें वीरता होती है, उससे भी बड़ी वीरता अहिंसा में होती है। जिसके पास शक्ति है, लब्धि है, पर वह लब्धि का प्रयोग नहीं करता, यह सबसे ऊंची वीरता है। कायर तो समरांगण में ही जाने से डरता है। शक्ति होने पर भी वार नहीं करना महावीरता हो जाती है। भय से भी व्यक्ति हिंसा कर लेता है। वीर पुरुष इस महान विधि अहिंसा के प्रति समर्पित होते हैं। अहिंसा में निर्भयता चाहिए। आदमी सामर्थ्यवान होने पर भी न मारे, 'मार सके मारे नहीं, ताको नाम मर्द।'

हमारे व्यवहार में अहिंसा की नीति हो। हमारे देश में भी अहिंसा की नीति हो कि हम चलाकर किसी पर आक्रमण नहीं करेंगे। लोकतंत्र की दो प्रणालियां हैं- लोकतंत्र और राजतंत्र। प्रणाली भले दो हो पर उसमें अहिंसा का भाव हो। सामान्य आदमी राष्ट्र का राष्ट्रपति-प्रधानमंत्री बन सकता है, इसमें भी समानता है। अहिंसा-समता की भावना इसमें है। न्याय देने में देरी हो जाए, पर अन्याय किसी के साथ न हो जाए। कितने धर्म और जाति के लोग आपस में साथ रहते हैं, इसमें अहिंसा झलकती है। साध्य महत्वपूर्ण है पर उसके साधन में भी अहिंसा हो।

पूज्यवर ने अगस्त माह में चलने वाले सपाद कोटि जप के अनुष्ठान का पावन शुभारम्भ करवाया। ऊपर के व्याख्यान में पूज्यवर ने आचार्य श्री तुलसी द्वारा रचित 'चन्दन की चुटकी भली' से 'नीति रो प्यालो' आख्यान को विस्तार से समझाया।

तेरापंथ किशोर मंडल एवं तेरापंथ कन्या मंडल ने चौबीसी का संगान किया। पूज्यवर ने तपस्याओं के प्रत्याख्यान करवाये। स्नेहलता चोरड़िया ने 14 की तपस्या के प्रत्याख्यान पूज्यवर से ग्रहण किये। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

दया का भाव आदमी को हिंसा से बचाने वाला और परोपकार में प्रवृत्त करने वाला हो सकता है।

-आचार्यश्री महाश्रमण

terapanthtimes.com

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

12 अगस्त - 18 अगस्त, 2024

नमस्कार महामंत्र से होता है आत्म रक्षा कवच का निर्माण

कांदीवली।

तेरापंथ भवन कांदीवली में साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञाजी के सान्निध्य में नमस्कार महामंत्र-आत्म रक्षा कवच अनुष्ठान का भव्य आयोजन तेयुप कांदीवाली और मलाड के तत्वावधान में आयोजित हुआ। अनुष्ठान में संभागी सैकडों साधक-साधिकाओं को सम्बोधित करते हुए साध्वीश्री ने कहा- नमस्कार महामंत्र महा-मृत्युंजय जप है। इसकी आराधना विघ्न-बाधाओं को दूर करती है। आधि, व्याधि, उपाधि निवारक यह विशद मंत्र है। इस मंत्र की एकलयता से साधकों ने अनेक ऋद्धियां-सिद्धियां प्राप्त की है। हमें यह महामंत्र विरासत में मिला है। इस महामंत्र की साधना से प्राणशक्ति वृद्धिंगत होती है।

> **हमारा तेजस शरीर मंत्र साधना की तेजस शक्ति को सक्रिय बना देता है।**

साध्वीश्री जी ने कहा- तात्विक दृष्टि से चिन्तन करें तो हमारा तेजस शरीर मंत्र साधना की तेजस शक्ति को सक्रिय बना देता है। नमस्कार महामंत्र से जैनाचार्यों ने हजारों मंत्र बनाए। आत्मा की सुरक्षा, शरीर की सुरक्षा के लिए नमस्कार मंत्र महान औषध है। साध्वीश्री जी द्वारा संभागियों का अनुष्ठान करवाया गया। तेरापंथ युवक परिषद कांदीवली अध्यक्ष राकेश सिंघवी ने स्वागत स्वर प्रस्तुत किए।

साध्वी वृंद ने साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा जी द्वारा रचित 'परमेष्ठी स्तम्भ' का सामूहिक संगान किया। तेयुप मलाड अध्यक्ष जयन्ती मादरेचा ने आभार ज्ञापन किया।

इस अवसर पर समण संस्कृति संकाय द्वारा आयोजित होने वाली जैन विद्या परीक्षा के बैनर का लोकार्पण किया। ज्ञानशाला प्रशिक्षिका संगीता इंटोदिया ने विचार व्यक्त किए।

नव गठित परिषद् का शपथ ग्रहण समारोह

गाँधीनगर, दिल्ली।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की विदुषी शिष्या 'शासनश्री' साध्वी रविप्रभा जी ठाणा -5 के सान्निध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् दिल्ली की नई शाखा तेरापंथ युवक परिषद गाँधीनगर-दिल्ली का भव्य शुभारम्भ व सत्र 2024-25 का शपथ ग्रहण समारोह जैन संस्कार विधि से तेरापंथ भवन, कृष्णानगर, दिल्ली में आयोजित किया गया। संस्कारक हेमराज राखेचा, पवन गिड़िया, मनीष बरमेचा, जतन श्यामसुखा, महेन्द्र श्यामसुखा ने पूरे विधि विधान व मंगल मंत्रोच्चार से शपथ ग्रहण संस्कार संपादित करवाया।

दिल्ली सभा अध्यक्ष सुखराज सेठिया ने नव मनोनीत अध्यक्ष अशोक सिंघी को पद एवं दायित्व की शपथ दिलाई। तत्पश्चात नव मनोनीत तेयुप अध्यक्ष अशोक सिंघी ने अपने पदाधिकारियों के नामों की घोषणा की जिन्हें दिल्ली सभा के मंत्री कमल गाँधी ने शपथ दिलाई। तत्पश्चात नव मनोनीत तेयुप अध्यक्ष ने अपनी पूरी टीम की घोषणा की। 'शासनश्री' साध्वी रविप्रभा जी एवं साध्वी पूर्णिमाश्रीजी ने अपने वक्तव्य में प्रेरणा प्रदान कर नवमनोनीत अध्यक्ष एवं गठित टीम के सभी सदस्यों का उत्साह वर्धन किया। इस अवसर पर कृष्णानगर दिल्ली क्षेत्र के निगम पार्षद संदीप कपूर, अणुव्रत विश्व भारती इंटरनेशनल के चैयरमैन तेजकरण सुराणा, अणुव्रत विश्व भारती के महामंत्री भीकमचन्द सुराणा, दिल्ली सभा महामंत्री प्रमोद घोड़ावत आदि अनेकों गणमान्य व्यक्तियों की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम में अभातेयुप प्रवृत्ति सलाहकार जतन श्यामसुखा सहित गाँधीनगर तेयुप के लगभग 100 से ज्यादा सदस्यगण एवं काफी संख्या में श्रावक-श्राविका समाज की उपस्थिति रही।

शपथ ग्रहण कार्यक्रम का मंच संचालन जैन संस्कारक और विकास मंच के महामंत्री महेन्द्र कुमार श्यामसुखा ने किया। आभार ज्ञापन नव मनोनीत मंत्री प्रकाश सुराणा ने किया।

गुरु नहीं तो जीवन शुरु नहीं

चेन्नई।

तेरापंथ स्थापना दिवस के अवसर पर तेरापंथ जैन विद्यालय में आयोजित प्रवचन सभा को संबोधित करते हुए मुनि हिंमांशुकुमार ने कहा कि आज 265वां तेरापंथ स्थापना दिवस और भारत का गौरवशाली पर्व गुरु पूर्णिमा है, दोनों एक दूसरे से जुड़े हैं। जिसके जीवन में गुरु नहीं, उसका जीवन शुरु नहीं।

हमें गुरु भिक्षु ने भगवान महावीर वाणी को जन भोग्य और सरल रूप में समझाया और उनका वही मार्गदर्शन आगे चल कर तेरापंथ की स्थापना का निमित्त बना। आचार्य भिक्षु की क्रांत दृष्टि के परिणाम स्वरूप स्थापित तेरापंथ के सिद्धांतों और मान्यताओं को स्पष्ट करते हुए मुनिश्री ने आगे कहा कि कहा कि संसार और साधना का मार्ग एक नहीं, अलग है।

आत्मशुद्धि का मार्ग और व्यवहार का, सामाजिकता का मार्ग एक नहीं, अलग-अलग है। तेरापंथ के तत्त्वदर्शन को भिक्षु विचार दर्शन के माध्यम से समझने की प्रेरणा देते हुए मुनिश्री कहा कि आचार्य भिक्षु ने सदा जिनवाणी की आराधना की और उसी का पालन करने को आह्वान किया। जरुरत इस बात की है कि हम तत्व को समझे, सत्य को समझें, जिससे हम आदर्श और सफल जीवन के मार्ग पर प्रशस्त होते रहें।

मुनि हेमन्तकुमारजी ने अपने संयोजकीय वक्तव्य में कहा कि गुरु वह है, जो हमारी स्वयं से मुलाकात कराए। जो अपने पीछे लगाए, वह गुरु नहीं। मुनिश्री ने गुरु के प्रति समर्पण और निष्ठा भाव को पुष्ट करने की प्रेरणा देते हुए ते हुए कहा की जुड़ना महत्त्वपूर्ण है और इससे भी महत्वपूर्ण है जुड़े रहना।

कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ कन्या मंडल ने 'भिक्षु अष्टकम्' के सुमधुर संगान से किया।

ज्ञान का कोई अंत नहीं है

डांविबली।

उग्रविहारी तपोमुर्ति मुनि कमलकुमार जी के सान्निध्य में पच्चीस बोल की कार्यशाला का आयोजन किया गया। उपासक पिंकेश जैन ने पच्चीस बोल के विषय में विविध प्रकार के दृष्टांतों के माध्यम से बताने का प्रयास किया। मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा कि जैन धर्म के तत्व संक्षेप और विस्तार दोनों प्रकार से समझे जा सकते हैं। सार रूप में यह संसार जीव और अजीव दो मार्गों में विभक्त किया जा सकता है और कोई विस्तार से समझना चाहता है तो इसके पांच सौ तिरसठ भेद भी किये जा सकते हैं। इस प्रकार जिसके पास जितना समय हो, जितनी क्षमता हो, उसी प्रकार उसे समझाया जा सकता है। मुनिश्री ने कहा कि सांसों का अंत आ सकता है पर ज्ञान का कोई अंत नहीं है, इसीलिए ज्ञान को अनंत कहा जाता है। जितना ज्ञान मिले उसे हम ग्रहण करने का प्रयास करें। सभा के अध्यक्ष दलपत इंटोदिया ने आभार ज्ञापन किया। मुनि नमिकुमार जी ने 49 दिन की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। कार्यक्रम में सभा महिला मंडल, युवक परिषद, किशोर मंगल, कन्या मंडल ने भी सामायिक सहित भाग लिया।

> **पच्चीस बोल कार्यशाला का आयोजन**

तेरापंथी ज्ञानशाला संपर्क पखवाड़ा 2024 का शुभारंभ

सिकंदराबाद।

'शासनश्री' साध्वी शिवमाला जी आदि ठाणा-4 की पावन सन्निधि में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद के तत्वावधान में महासभा द्वारा निर्देशित संपर्क पखवाड़े की भव्य शुरुआत ज्ञानशाला जागरूकता रैली के साथ हुई। जिसमें नगर में संचालित सभी ज्ञानशालाओं की प्रशिक्षिकाओं व ज्ञानार्थियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया और समाज में संस्कार हेतु ज्ञानशालाओं के प्रति जागरूकता पर पुरजोर दिया। लक्ष्मीपत बैद द्वारा रैली को हरी झंडी दिखाई गई। संस्कारों की शाला- ज्ञानशाला, ज्ञानशाला की जिम्मेदारी-बच्चों को बनाना संस्कारी जैसे नारों से गलियों को गुंजायमान करते हुए रैली अपने गंतव्य स्थल डी. वी. कॉलोनी तेरापंथ भवन पहुंचकर रैली सभा में परिवर्तित हो गई।

'शासनश्री' साध्वीश्री शिवमाला ने प्रेरणा प्रदान करते हुए प्रसंगों, घटनाओं के माध्यम से बताया कि भौतिकता की चकाचौंध में, होड़ाहोड़ में, गलत संगति में बच्चों का जाना समाज के लिए चिंतनीय विषय है। इनसे बचाव और जैनत्व के संस्कारों की सुरक्षा के लिए ज्ञानशाला अति महत्वपूर्ण है।

साध्वी अमितरेखा जी ने ज्ञानार्थियों को त्रिपदी वंदना करवाई। साध्वी अर्हमप्रभाजी व साध्वी रत्नप्रभाजी ने ज्ञानशाला की उपयोगिता बताते हुए सभी अभिभावकों से बच्चों को ज्ञानशाला से जोड़ने का आह्वान किया व उनकी बच्चों के प्रति नैतिक व उत्तम चरित्र निर्माण की जिम्मेदारी की और ध्यान आकृष्ट किया।

साध्वीश्री जी के सान्निध्य में संपर्क पखवाड़े के बैनर का अनावरण हुआ।

संक्षिप्त खबर

'निर्माण-बढ़ते कदम विकास की ओर' कार्यक्रम का आयोजन

जसोल। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में तेरापंथ महिला मंडल जसोल द्वारा 'निर्माण-बढ़ते कदम विकास की ओर' कार्यक्रम का आयोजन भील बस्ती, नाकोड़ा रोड़, जसोल की महात्मा गांधी स्कूल में आयोजित किया गया। सामूहिक नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत की गई। स्कूल के बच्चों द्वारा मंगलाचरण किया गया। अध्यक्ष कंचन देवी ढ़ेलडिया ने सभी का स्वागत किया। मंत्री अरुणा डोसी ने बताया कि 'विद्यालय संरक्षण के अंतर्गत भील बस्ती स्कूल में इन्वर्टर भेंट किया गया। स्कूल प्रधानाचार्य ने तेरापंथ महिला मंडल, जसोल का आभार ज्ञापन किया। भील बस्ती में ही आयोजित कैंसर जागरूकता अभियान के अंतर्गत डॉ. विक्रमसिंह राजपुरोहित पुरोहित ने कैंसर के बारे में विविध जानकारी प्रदान की। उपाध्यक्ष सरोज भंसाली ने आभार प्रकट किया। इस अवसर पर अध्यक्ष कंचन देवी ढ़ेलडिया, उपाध्यक्ष सरोज भंसाली, जयश्री सालेचा, फेनादेवी भंसाली, सह मंत्री मीना भंसाली, संगीता बुरड़ आदि उपस्थित थे।

प्रबल पराक्रम के पुरोधा थे आचार्य श्री भिक्षु

बेंगलुरु। साध्वी उदितयशाजी के सान्निध्य में तेरापंथ स्थापना दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम से पूर्व अनुशासन रैली का आयोजन किया गया। यह रैली जैन धर्म, तेरापंथ एवं आचार्य भिक्षु से आचार्य महाश्रमणजी के अवदानों का जयघोष करती हुई तेरापंथ भवन गांधीनगर पहुंची। इसमें ज्ञानशाला के साथ सम्पूर्ण तेरापंथ श्रावक समाज की सहभागिता रही। साध्वी उदितयशाजी ने अपने वक्तव्य में कहा- आचार्य भिक्षु एक महान साधक व सत्य के पुजारी थे। उनका नाम स्वयं एक मंत्र बन गया। हम सभी उनके सिद्धांतों पर अमल करें।

साध्वी संगीतप्रभाजी, साध्वी भव्ययशाजी एवं साध्वी शिक्षाप्रभाजी ने सुमधुर गीत का संगान किया। कार्यक्रम की शुरुआत प्रज्ञा संगीत सुधा के मंगलाचरण से हुयी।

शपथग्रहण कार्यक्रम सम्पन्न

जलगाँव। आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी प्रबलयशाजी ठाणा- 3 का पावन सान्निध्य में तेरापंथ सभा जलगाँव वर्ष 2024-26 का शपथग्रहण कार्यक्रम सानंद सम्पन्न हुआ। साध्वी प्रबलयशाजी ने सभा की नवीन टीम को समाज में अच्छे कार्य की प्रेरणा दी। निवर्तमान अध्यक्ष जितेन्द्र चोरडिया ने ने नव मनोनीत अध्यक्ष पवन सामसुखा को एवं नव मनोनीत अध्यक्ष ने उपाध्यक्ष प्रथम- नोरतमल चौरडिया, उपाध्यक्ष द्वितीय- सुशील मालू , मंत्री- सुनील बैद, सहमंत्री प्रथम- जितेन्द्र छाजेड, सहमंत्री द्वितीय-पवन सिंघी, कोषाध्यक्ष- रूपेश सुराणा, संगठन मंत्री- मनोज नाहटा को नियुक्त कर कार्यकारिणी की घोषणा की एवं उन्हें शपथ ग्रहण करवाई।

ॐ भिक्षु का ग्यारह लाख सतर हजार जाप

कांकरिया मणिनगर। आचार्य भिक्षु जन्म दिवस, बोधि दिवस, तेरापंथ स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में 'शासनश्री' साध्वी रामकुमारी जी आदि ठाणा के सान्निध्य में एवं श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा कांकरिया मणिनगर के तत्वावधान में 11,70,000 'ॐ भिक्षु' का जप 300 श्रावक-श्राविकाओं द्वारा किया गया।

आचार्य भिक्षु शक्तिधर, ज्योतिर्धर और महान श्रुतधर आचार्य थे

जयपुर।

'शासनगौरव' साध्वी कनकश्रीजी के सान्निध्य में तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक आचार्य श्री भिक्षु का जन्मदिवस, बोधि दिवस, चातुर्मासिक चतुर्दशी एवं 265वां तेरापंथ स्थापना दिवस आदि सभी कार्यक्रम आध्यात्मिक गुलदस्ते की भांति सोल्लास मनाए गए। तेरापंथी सभा जयपुर द्वारा विधाधर नगर सभा भवन में बहुश्रुत परिषद् की सम्मान्य सदस्या साध्वीश्री ने धर्मक्रांति के सूत्रधार आचार्य भिक्षु को श्रद्धाप्रणति करते हुए कहा- आचार्य भिक्षु पूर्व जन्मों की तप साधना का प्रखर तेज लेकर आए थे। वे अलौकिक तेज पुंज थे। उन्होंने जीवन भर सत्य ज्योति की, आत्म ज्योति की आराधना की। वे ज्योति बन कर जिए और लोक चेतना को सत्य की ज्योति का विरल उपहार देकर गए।

साध्वीश्री ने स्वामीजी की ज्योतिर्मय जीवन यात्रा के प्रेरक प्रसंगों की प्रस्तुति देते हुए कहा- आचार्य भिक्षु जैसी विरल आध्यात्मिक विभूति का जिस गांव और जिस परिवार में अवतरण होता है, वह भी इतिहास में स्वर्णाक्षरों से अभिमंडित हो जाता है। इस अवसर पर साध्वी मधुलताजी एवं साध्वी संस्कृतिप्रभा जी ने भी अपनी आस्थासिक्त भवनाएं प्रस्तुत की। साध्वीवृंद ने भावपूर्णगीत को समवेत स्वरों में प्रस्तुति की। साध्वी समितिप्रभा जी ने काव्य के माध्यम से भाव सुमन समर्पित किये।

चातुमासिर्क चतुर्दशी को हाजरी का वाचन कर साध्वीश्री ने वर्षायोग- अध्यात्म के नये प्रयोग विषय पर प्रवचन करते हुए कहा- भारतीय संस्कृति त्याग, संयम और अध्यात्म की संस्कृति है। चतुर्मास धर्माराधना का सुनहरा अवसर है। परम पूज्य आचार्य प्रवर के असीम अनुग्रह से जिस क्षेत्र को चतुर्मास में साधु-साध्वियों का सान्निध्य मिलता है, वह सौभाग्यशाली होता है। अपेक्षा है हम धर्म को प्रायोगिक रूप दें, नये-नये प्रयोगों द्वारा चैतन्य-विकास की दिशा में विशेष उपलब्धि करें।

साध्वी मधुलताजी ने केन्द्र द्वारा निर्दिष्ट चातुर्मासिक साधना आराधना के नियमों की व्याख्या करते हुए समाज को ज्ञानाराधना के साथ-साथ तप-त्याग की बलवती प्रेरणा दी। साध्वीवृंद ने प्रेरक गीत प्रस्तुत किया। स्थानीय शेखावाटी भवन के सभागार में उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं ने तप-मंगल स्वरूप उपवास का प्रत्याख्यान किया।

265वां तेरापंथ स्थापना दिवस का बुहु आयामी कार्यक्रम स्थानीय शेखावाटी भवन के विशाल सभागार में आयोजित हुआ। तेरापंथ महिला मंडल सी स्कीम की युवतियों ने मंगल संगान किया। साध्वी मधुलेखाजी के संक्षिप्त वक्तव्य के पश्चात 'शासनगौरव' साध्वी कनकश्रीजी ने आचार्यश्री भिक्षु को श्रद्धाप्रणति करते हुए कहा कि आचार्य भिक्षु शक्तिधर, ज्योतिर्धर और महान श्रुतधर आचार्य थे। वे सत्य के खोजी, अहिंसा के प्रखर चिंतक और प्रयोक्ता थे। उनकी तप साधना, आगम मंथन और आध्यात्मिक अनुभूतियों से निकला नवनीत है तेरापंथ। साध्वीश्री ने आगे कहा- हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें गुरु पूर्णिमा के दिन आचार्य भिक्षु जैसे परमार्थी प्रज्ञापुरूष गुरू मिले। गुरू प्रकाशपुंज होते हैं और शिष्यों के अंतस्तल को दिव्य ज्ञान के आलोक से आलोकित कर देते हैं। वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमण अपने परम पुरूषार्थ से विश्व चेतना को जगा रहे हैं।

गुरू पूर्णिमा के संदर्भ में साध्वीश्री द्वारा नवरचित गीत 'जोत जलाई बोधि की जोत जलाई' साध्वी वृंद द्वारा प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर कई भाई-बहनों ने जप अनुष्ठान पूर्वक तेला तप किया। साध्वी श्री ने उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं को सम्यक्त्व दीक्षा प्रदान की। त्रिदिवसीय कार्यक्रमों का सफल संचालन साध्वी मधुलताजी ने किया।

त्रिदिवसीय तत्वज्ञान कार्यशाला का आयोजन

उदयपुर।

डॉ. साध्वी परमयशाजी ने त्रिदिवसीय तत्वज्ञान कार्यशाला में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि शिखर पर पहुंचने के लिए आत्मविश्वास चाहिए, उत्साह, उमंग, ऊर्जा का अहसास चाहिए। साध्वीश्री ने कहा कि शुभ-अशुभ प्रवृत्ति के द्वारा आकृष्ट पुदगल स्कन्ध आत्मा के साथ एकीभूत हो जाते हैं, वे कर्म कहलाते हैं। कर्मों का एक छत्र साम्राज्य है, जिसे शूरवीर ही जीत सकते हैं।

आत्मा की ज्ञान चेतना को आवृत्त करने वाला ज्ञानावरणीय कर्म है। ज्ञान या ज्ञानी की आशातना करना, निंदा करना, ज्ञान प्राप्ति में अंतराय देना, ज्ञान या ज्ञानी से द्वेष रखना, ये ज्ञानावरणीय कर्म बंध के कारण हैं। शकडाल की बेटियों की विलक्षण बुद्धि थी। न्यूटन प्रयासों से आसमान की ऊँचाई छूने वाला बन गया। हर इंसान न्यूटन की तरह बन सकता है। मेमोरी पॉवर वीक क्यों? इसका हेतु है ज्ञान चेतना पर आवरण। हमारे ब्रेन के दो डिपार्टमेंट हैं राइट हेमिस्फियर जो अध्यात्म विद्या का सेंटर है। लेफ्ट हेमिस्फियर जो विज्ञान भूगोल-खगोल गणित आदि का नियामक है। जब हम समवृत्ति श्वास प्रेक्षा करते हैं तो ब्रेन के दोनों विभाग सक्रिय रहते हैं। यादाश्त को बढ़ाने के लिए ज्ञान मुद्रा का प्रयोग करें। मेरे ज्ञान का विकास हो रहा है, बार-बार ऐसी अनुप्रेक्षा करें। संकल्प इच्छा शक्ति के द्वारा ज्ञान चेतना का जागरण करें।

आपने आगे कहा कि आत्मा की दर्शन चेतना को आवृत्त करता है- दर्शनावरणीय कर्म। सुख-दुख की अनुभूति में हेतुभूत है- वेदनीय कर्म। चेतना को विकृत करने वाला है- मोहनीय कर्म। आयुष्य कर्म उम्र का निर्धारण करता है। शरीर संस्थान में नाम कर्म हेतु भूत बनता है। उच्च-नीच, शुभ-अशुभ का निमित्त है गोत्र कर्म। आत्मशक्ति की उपलब्धि में बाधादायक है-अंतराय कर्म। डॉ. साध्वी परमयशाजी, साध्वी विनम्रयशाजी, साध्वी मुक्ताप्रभाजी और साध्वी कुमुदप्रभाजी ने 'कोऽहं से सोऽहं की यात्रा तत्वज्ञान सिखाए' गीत का संगान किया। साध्वी मुक्ताप्रभाजी ने चार गति के बारे में बताते हुए कहा कि हम दो गति पर सदा-सदा के लिए ताला लगा दें और एक दिन ऐसा आए कि हम सब शब्दातीत, मनातीत, भावातीत बन जाएँ।

त्रिदिवसीय तत्वज्ञान कार्यशाला के अंतिम दिन 'तत्वज्ञान से भवसागर तरो' प्रतियोगिता का समायोजन हुआ। प्रतियोगिता में 7 ग्रुप के माध्यम से श्रावक-श्राविकाओं ने प्रतियोगिता में भाग लिया।।

संक्षिप्त खबर

संयम के पथ पर वही आगे बढ़ सकता है जिसका मुमुक्षा भाव प्रबल हो

पेटलावद। संयम ही जीवन है, इस आदर्श वाक्य को सामने रखने वाला ही संयमी बन सकता है। जिसका मुमुक्षा भाव प्रबल हो, जिसमें आराध्य वीतराग भगवान के प्रति अटूट आस्था, गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण हो, ऐसा व्यक्ति संयम के पथ पर आगे बढ़ सकता है। उक्त आशय के उद्गार साध्वी उर्मिलाकुमारी जी ने प्रेक्षा पटवा के पारमार्थिक शिक्षण संस्था में प्रवेश से पूर्व समाजजनों द्वारा आयोजित मंगल भावना समारोह में व्यक्त किए। साध्वीश्री ने आगे कहा कि संकल्प बल से सम्पन्न व्यक्ति को मार्ग की कठिनाइयां कभी डिगा नहीं सकती। एक वर्ष का दीक्षित संयमी मुनि उस सुख का अनुभव करता है जो सुख देवताओं और चक्रवर्ती को भी उपलब्ध नहीं होता है। इसके लिए आवश्यक है मन का अनुशासन, भावनाओं की पवित्रता और चिंतन की विधायकता। इस अवसर पर साध्वी मृदुलयशाजी ने पारमार्थिक शिक्षण संस्था के 75 वर्षों के इतिहास का उल्लेख करते हुए चतुर्मास मे करणीय उपवास की बारी जप, तप आदि धर्म आराधना करने की प्रेरणा प्रदान की।

गुरु जीवन के निर्माता होते हैं

मण्डिया (कर्नाटक)। साध्वी संयमलताजी ने कहा - गुरु रोशनी के वृक्ष हैं, जिसके पत्ते-पत्ते पर नूर टपकता है। गुरु की पूजा सत्य व अनुभव की पूजा है। गुरु ज्ञान का सूर्य है, प्रेम का महासागर है, शांति का हिमालय, समता का दर्शन है। पिता केवल जन्म देता है, गुरु जीवन का सही निर्माण करने वाले होते हैं, अनगढ पत्थर को प्रतिमा का रूप देने वाले होते हैं। ऐसे आचार्य महाश्रमण को गुरु के रूप में पाकर सौभाग्य की सराहना करते हैं। उनके आदर्शों को जीवन में अपनाकर लक्षित मंजिल को प्राप्त करें। साध्वी रौनकप्रभाजी ने एक कहानी के माध्यम से बच्चों को प्रेरित किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी मार्दवश्रीजी ने किया। गुरु पूर्णिमा के उपलक्ष्य में तेरापंथ युवक परिषद् मण्डिया द्वारा सुन्दर गीतिका का संगान किया गया। आभार ज्ञापन प्रदीप भंसाली ने किया।

शपथ ग्रहण समारोह

पुणे। तेरापंथ युवक परिषद, पुणे के नव नियुक्त अध्यक्ष, पदाधिकारियों व कार्यकारिणी सदस्यों का शपथ ग्रहण समारोह जैन संस्कार विधि द्वारा संपादित किया गया। वर्ष 2024-25 के नव नियुक्त अध्यक्ष अक्षय चपलोत, पदाधिकारियों व कार्यकारिणी सदस्यों को तेयुप के निवर्तमान अध्यक्ष मनोज संकलेचा ने शपथ दिलाई। संस्कारकों की प्रेरणा से उपस्थित सभी युवकों ने संकल्प लिए। डॉ. मुनि आलोककुमार जी ने युवकों को प्रेरणा प्रदान की। संस्कारक के रूप में मनोज संकलेचा, धर्मेंद्र चोरड़िया, प्रशान्त चोरडिया, अभिजीत बैंगानी, प्रवीण सुराणा, रोशन चोरडिया की भूमिका रही।

'संस्कार शाला' की पहली कार्यशाला

पाली। अभातेममं के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल पाली द्वारा, सुषमा डागा की अध्यक्षता में 'समृद्ध राष्ट्र योजना' के तहत 'चीमा बाई संचेती विद्यालय पाली' में 'संस्कार शाला' की पहली कार्यशाला का आयोजन किया गया। बबिता सालेचा ने कार्यशाला का संक्षिप्त विवरण दिया। उपाध्यक्ष दीपिका वैदमुथा और सहमंत्री मीना मण्डोत ने 'महाप्राण ध्वनि' का प्रयोग करवाया और इससे होने वाले लाभ को बताया। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल सदस्या विनिता बैंगानी ने 'क्रोधी नहीं, सहनशील बनो' विषय पर कहानी सुनाते हुए कहा कि क्रोध करने से हमारा काम बिगड़ता है, सहनशीलता से जीवन में उपलब्धियां प्राप्त होती हैं। पूर्व अध्यक्ष उषा मरलेचा, मंत्री सीमा मरलेचा ने अपने विचार व्यक्त किए।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

■ **सूरत।** उदासर निवासी सूरत प्रवासी संजय कुमार-अंकिता मणोत के प्रांगण मे कन्या धन का जन्म हुआ, जिसका नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक विनीत श्यामसुखा, बजरंग बैद, अमित चोपड़ा ने सम्पूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार से सानंद संम्पन करवाया गया। संस्कारक विनीत ने नामकरण पत्रक का वाचन करते हुए नवजात शिशु का नाम दित्या घोषित किया।

■ **साउथ कोलकाता।** राजेन्द्र कुमार- प्रीति भंसाली की सुपौत्री एवं राहुल-रजनी भंसाली (छापर निवासी - साउथ कोलकाता प्रवासी) की पुत्री का नामकरण जैन संस्कार विधि से संस्कारक महेंद्र दुगड़ एवं सह संस्कार रोहित दुगड़ द्वारा मंत्रोच्चार के साथ सम्पन्न हुआ।

नूतन गृह प्रवेश

■ **साउथ कोलकाता।** तेरापंथ युवक परिषद्, साउथ कोलकाता के अंतर्गत बीकानेर निवासी-कोलकाता प्रवासी शांति लाल डागा के सुपुत्र राजेश डागा का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से जैन संस्कारक सुरेन्द्र सेठिया ने पूरे मंत्रोच्चार के साथ अलीपुर, कोलकाता में सम्पन्न करवाया।

■ **पूर्वांचल कोलकाता।** तारानगर निवासी - पूर्वांचल, कोलकाता प्रवासी गौरव डागा (सुपुत्र अशोक कुमार - मीना डागा) का नूतन गृह प्रवेश के जैन संस्कारक महेंद्र दुगड़ एवं संस्कारक अनूप गंग ने स्वर्णमणि, कोलकाता में सम्पूर्ण विधि विधान द्वारा संपादित करवाया।

■ **अमराइवाडी ओढव।** आमली निवासी, अहमदाबाद प्रवासी बालचंद चपलोत के अमराइवाडी स्थित नवीन मकान का शुभारम्भ जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक दिनेश टूकलिया एवं पंकज डांगी ने मंगल मंत्रोच्चार के साथ परिसम्पन्न करवाया।

■ **सूरत।** उदासर निवासी सूरत प्रवासी मेघराज महनोत के सुपुत्र राकेश महनोत का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक प्रकाश डाकलिया, विनीत श्यामसुखा, बजरंग बैद ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

पाणिग्रहण संस्कार

■ **कोलकाता।** अलीपुर-कोलकाता प्रवासी पवन कुमार बाबेल के सुपुत्र श्रेयांश बाबेल का शुभ पाणिग्रहण संस्कार, साल्टलेक पूर्वांचल–कोलकाता प्रवासी विमल सिंह छाजेड़ की सुपुत्री कामना छाजेड़ के संग जैन संस्कार विधि द्वारा जैन संस्कारक महेंद्र दुगड़, विनोद सुराना एवं अनूप गंग ने मंगल मंत्रोच्चार एवं विधि विधान से विवाह संस्कार परिसम्पन्न करवाया।

■ **गंगाशहर।** उकचंद जैन के सुपुत्र राहुल जैन का शुभ विवाह सुनील कुमार भंसाली की सुपुत्री ज्योत्सना रानी के साथ टीएम ऑडिटोरियम गंगाशहर में जैन संस्कार विधि से सानंद संपन्न हुआ। जैन संस्कारक रतनलाल छलाणी, भरत गोलछा, विनीत बोथरा, देवेंद्र डागा, विपिन बोथरा ने विवाह संस्कार का मांगलिक आयोजन विधि विधान पूर्वक सम्पन्न करवाया।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

■ **सूरत।** सायरा निवासी सूरत प्रवासी हिम्मतमल भोगर के सुपुत्र दीपक जैन के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारम्भ जैन संस्कार विधि से संस्कराक गौतमचंद वेदमुथा, मिठालाल भोगर ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानन्द संपन्न करवाया।

■ **पूर्वांचल-कोलकाता।** गंगाशहर निवासी-पूर्वांचल-कोलकाता प्रवासी जयंत बरड़िया का नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ जैन संस्कारक सुरेन्द्र सेठिया एवं सह-संस्कारक अनूप गंग ने सम्पूर्ण विधि विधान द्वारा संपादित करवाया।

गुस्से में लिया गया निर्णय हमेशा गलत साबित होता है

आमेट।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल आमेट द्वारा 'समृद्ध राष्ट्र योजना' के अंतर्गत संस्कार शाला का प्रथम चरण युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी की सुशिष्या साध्वी विशदप्रज्ञा की सहवर्ती साध्वी मननयशाजी, साध्वी मंदारप्रभाजी के सान्निध्य में तुलसी अमृत विद्यापीठ स्कूल में आयोजित किया गया। कार्यशाला में 'क्रोधी नहीं सहनशील बने' इस विषय पर साध्वीश्री ने बच्चों को उद्बोधन दिया।

साध्वीश्री ने बच्चों को बताया कि हमें हर बात पर गुस्सा नहीं होने चाहिए। गुस्से में लिया गया निर्णय हमेशा गलत ही साबित होता है। ज्यादा गुस्से से बच्चे नकारात्मकता व डिप्रेशन के शिकार भी हो जाते हैं, अतः हमें हमेशा अच्छा सोचना है। हमें यह सोचना है कि हम आगे से कुछ अच्छा, कुछ नया करेंगे, कभी हताश होकर गलत कदम नहीं उठाएंगे। साध्वीश्री ने बच्चों को गुस्सा शांत करने के कुछ उपाय व कुछ प्रयोग भी बताए। कार्यक्रम की अध्यक्षता तुलसी अमृत विद्यापीठ के अध्यक्ष मनसुखलाल बम्ब ने की। यह कार्यक्रम तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा संगीता पामेचा के नेतृत्व में कार्यशाला संयोजिका मनीषा छाजेड़ ने संपादित करवाया।

स्वागत भाषण कार्यशाला सहसंयोजिका सज्जन मेहता ने दिया। कार्यक्रम का कुशल मंच संचालन अध्यापिका मनु सांखला ने किया।

265वें तेरापंथ स्थापना दिवस पर विविध आयोजन

अमराईवाड़ी, ओढव

साध्वी काव्यलता जी के सान्निध्य में तेरापंथ धर्मसंघ का 265वां स्थापना दिवस कार्यक्रम सिंघवी भवन, अमराईवाड़ी में आयोजित किया गया। नमस्कार महामंत्र के पश्चात् महिला मंडल सदस्यों ने मंगलाचरण किया। साध्वी काव्यलताजी ने अपने वक्तव्य में कहा- आज के दिन आचार्य भिक्षु ने भाव दीक्षा स्वीकार की। इस उपक्रम में उनके साथ तेरह साधु थे। उन्होंने चिंतन किया की संख्या भले कम हो, शुद्ध, पवित्र साधुता हो, इसी आधार पर उन्होंने तेरापंथ धर्म संघ को खड़ा किया। आज तेरापंथ का जन्म दिवस है। इस अवसर पर तेरापंथ सभा, अमराईवाड़ी द्वारा अनुशासन रैली का का आयोजन किया गया। साध्वी सुरभिप्रभाजी, साध्वी राहतप्रभाजी ने 'स्थापना दिन हो आज महान' गीत का संगान किया।

जीन्द

तेरापंथ सभा भवन जीन्द में 265 वां तेरापंथ स्थापना दिवस 'शासनश्री' साध्वी तिलकश्री जी ठाणा-3 के सान्निध्य में आयोजित किया गया। साध्वीश्री ने गुरू की महिमा को अपरंपार बताते हुए कहा- गुरु इस भव सागर से तारने वाले होते हैं। साध्वीश्री ने तेरापंथ धर्म संघ की स्थापना एवं विकास के बिंदुओं पर विस्तार से प्रकाश डाला। साध्वी महिमाश्रीजी ने 'मंत्र दीक्षा के लाभ' विषय पर अपने विचार रखे।

गुवाहाटी

मुनि प्रशांतकुमारजी ने 265वें तेरापंथ स्थापना दिवस कार्यक्रम में कहा- लगभग ढाई सौ वर्ष पूर्व राजस्थान की धरती पर एक धर्मक्रांति हुई थी, जिसके महानायक थे आचार्य भिक्षु। शुद्ध आचार और शुद्ध विचार को साधुचर्या में संस्थापित करने के पवित्र उद्देश्य से आचार्य भिक्षु ने धर्मक्रांति की थी। आचार्य भिक्षु ने भगवान महावीर के सिद्धांतों को युग के अनुरूप प्रस्तुत किया। दुनिया को सम्यक्त्व का बोध दिया। हमारे जीवन में आचार्य भिक्षु का बहुत उपकार है। पद, नाम से कर्म निर्जरा नहीं होती है। कर्म निर्जरा त्याग-प्रत्याख्यान धर्म-साधना से ही होती है। संस्थाएं सेवा का माध्यम बनें, अहंकार का कारण न बनें। धर्म का रास्ता विनय का रास्ता है, सेवा भावना धर्म में सहायक बनती है। हमारे जीवन में जैनत्व के संस्कार होने चाहिए। त्याग-तप से श्रावक धर्म की अनुपालना सम्यक् रूप से होती है। चातुर्मास धर्म आराधना करने का, जीवन के भाग्योदय का समय है। मुनि कुमुदकुमारजी ने कहा - आचार्य भिक्षु महान सत्यशोधक आचार्य थे। उनके द्वारा संस्थापित तेरापंथ धर्मसंघ में अहंकार और ममकार का कोई स्थान नहीं है। तेरापंथ संघ में श्रद्धा, समर्पण और विनय की महान परम्परा रही है। धर्मसंघ में एक से एक प्रतापी आचार्य हुए, जिन्होंने संघ की श्रीवृद्धि की। श्रावक-श्राविकाओं ने धर्मसंघ में अभूतपूर्व योगदान दिया। गुरु हमारे जीवन के आधार हैं। भारतीय संस्कृति में गुरु का गौरवशाली स्थान है। देव, गुरु, धर्म में हमारे विकास का प्रतिबिम्ब होता है। हम गुरु के प्रति पूर्ण समर्पित रहते हुए विनय, श्रद्धा को सम्यक् रूप से परिपक्व बनायें।

चेन्नई

डॉ. साध्वी गवेषणाश्रीजी के सान्निध्य में तेरापंथ स्थापना दिवस का कार्यक्रम जैन तेरापंथ नगर, माधावरम्, चेन्नई में आयोजित किया गया। साध्वीश्री ने कहा कि जैसे पानी के बिना नदी, अतिथि के बिना आंगन, पैसे के बिना पॉकेट बेकार है, वैसे ही गुरु के बिना जीवन बेकार है। भारतीय संस्कृति में गुरु का बड़ा महत्व है। गुरु अंधकार से प्रकाश की ओर, असत् से सत् की ओर, अज्ञान से ज्ञान की ओर ले जाता है। आज 265वां तेरापंथ स्थापना दिवस है। आज के दिन ही तेरापंथ को ऐसे गुरु मिले, जिनमें शौर्य था, तितिक्षा थी। आचार्य भिक्षु का शरीरबल, मनोबल, संयमबल और सिद्धान्तबल अनुत्तर था। आचार्य भिक्षु सत्य के प्रति सर्वात्मना समर्पित थे।

साध्वी मयंकप्रभाजी ने तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु की अभिवन्दना करते हुए कहा कि हमें ऐसे गुरु मिले जिनमें गरिमा, गौरव और गुरुत्व था। आचार्य भिक्षु के जीवन में अनेक संघर्ष आये परन्तु वे सत्य के प्रति सर्वात्मा समर्पित रहे। साध्वी दक्षप्रभाजी ने गीतिका के माध्यम से अपने विचार व्यक्त किए। स्थानीय महिलाओं ने मंगलाचरण किया। माधावरम् ट्रस्ट बोर्ड प्रबंध न्यासी घीसूलाल बोहरा, तेयुप अध्यक्ष संदीप मुथा ने आराध्य की आराधना में प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन साध्वी मेरुप्रभाजी ने किया।

कोयंबटूर

तेरापंथ भवन में मुनि दीपकुमारजी ठाणा-2 के सान्निध्य में 265 वां तेरापंथ स्थापना दिवस का आयोजन तेरापंथी सभा द्वारा किया गया। मुनि दीपकुमार जी ने कहा- तेरापंथ त्याग, तप और बलिदान की कहानी है। आज के दिन तेरापंथ की स्थापना हुई और एक गुरु प्राप्त हुए। गुरु अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाले होते हैं। आचार्य भिक्षु ने आज के दिन अंधेरी ओरी में प्रकाश किया था। उन्होंने तेरापंथ को एक आचार, एक विचार और एक आचार्य के आधार पर प्रतिष्ठित किया। तेरापंथ के आचार्यों ने आचार्य भिक्षु से लेकर वर्तमान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने इसे ऊंचाई प्रदान की है। साधु-साध्वियों एवं श्रावक-श्राविकाओं का बहुत योगदान रहा है। इस अवसर पर हम सब संघ और संघपति की सेवा का संकल्प लें।

गंगाशहर

तेरापंथी सभा गंगाशहर के तत्वावधान में साध्वी चरितार्थप्रभा जी व साध्वी प्रांजलप्रभाजी के सान्निध्य में तेरापंथ स्थापना दिवस का आयोजन शांतिनिकेतन सेवा केंद्र में किया गया। इस अवसर पर साध्वी चरितार्थप्रभाजी ने अपना उद्बोधन देते हुए कहा कि आचार्य भिक्षु विरले आचार्य थे, जिन्होंने चारित्र शुद्धि को पूरा महत्व दिया। एक संगठित, सुव्यवस्थित और सुदृढ़ श्रमण संघ का स्वप्न उन्होंने देखा और तेरापंथ धर्म संघ के रूप में मूर्त रूप दिया। तेरापंथ धर्म संघ की स्थापना वि.सं. 1817 आषाढ़ी पूर्णिमा के दिन हुई। साध्वी प्रांजल प्रभा जी ने कहा कि जिस व्यक्ति के जीवन में गुरु होता है उस व्यक्ति का जीवन खेल बन जाता है और जो व्यक्ति गुरु के अनुशासन में रहता है तो उस व्यक्ति का जीवन उत्सव बन जाता है। जैसे जीने के लिए श्वास आवश्यक है वैसे ही जीवन विकास के लिए व आध्यात्मिक विकास के लिए सद्गुरु की आवश्यकता होती है। आषाढ़ी पूर्णिमा के दिन तेरापंथ धर्म संघ को गुरु के रूप में आचार्य श्री भिक्षु मिले। आचार्य भिक्षु में अनुत्तर संयम था। आचार्य भिक्षु के जीवन में अनेक कष्ट आए, अत्यंत संघर्ष करना पड़ा लेकिन वे कभी संयम पथ से विचलित नहीं हुए। गुरु बनने की अर्हता उसमें होती है जो कष्ट झेलने की क्षमता रखते हैं। आचार्य भिक्षु को 5 वर्ष तक पूरा आहार नहीं मिला एवं ना रहने के लिए पर्याप्त जगह मिली, अनेक कठिनाइयां उठानी पड़ी, लेकिन फिर भी आचार्य भिक्षु सत्य के मार्ग पर चलते रहे और भगवान महावीर की वाणी को जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास करते रहे।

बालोतरा

साध्वी मंगलयशा जी के सान्निध्य में 265वां तेरापंथ स्थापना दिवस मनाया गया। साध्वीश्री ने कहा आषाढ़ी पूर्णिमा आत्म बोध प्रेरणा का शुभ त्योहार हैं। गुरु शिष्य के आत्मीय संबंधों की संचेतन व्याख्या है। तेरापंथ धर्मसंघ आचार्य भिक्षु द्वारा स्थापित अध्यात्म प्रधान धर्मसंघ है। तेरापंथ जैन धर्म का एक अत्यंत तेजस्वी और सक्षम संप्रदाय है। आचार्य भिक्षु अपने युग के विलक्षण पुरुष थे, अपनी इच्छा शक्ति के आधार पर उन्होंने धर्म क्रांति का आह्वान किया और सुविधा व प्रतिष्ठा का पथ छोड़कर कठिनाई भरे रास्ते पर चलना स्वीकार किया। साध्वी भास्करप्रभाजी ने कहा आषाढी पूर्णिमा का दिन गुरु पूर्णिमा के रूप में मनाते हैं। तेरापंथ का उद्भव विक्रम संवत् 1817 में हुआ। आचार्य भिक्षु के बाद 9 आचार्यों ने भी उन मौलिक मर्यादाओं व सिदांतो को आगे बढ़ाते हुए तेरापंथ का विस्तार किया।

पाली

तेरापंथ भवन में मुनि सुमतिकुमार जी ने तेरापंथ स्थापना दिवस के अवसर पर कहा- गुरु का उपकार कभी भुलाया नहीं जाता। गुरु की शरण में जो जाता है, उसकी नैया पार हो जाती है। आचार्य श्री भिक्षु ने आज के दिन तेरापंथ की स्थापना केलवा में की थी। मर्यादा व सत्य की साधना के प्रति आचार्य श्री भिक्षु सदैव जागरूक थे। हमें ऐसा मर्यादित संघ मिला है, उससे हमें गौरव की अनुभूति होती है। मुनि देवार्यकुमारजी ने कहा कि गुरु के प्रति आस्था से ही मोक्ष प्राप्ति संभव है। गुरु के निर्देश व वाणी में शक्ति है।

सिरियारी

भिक्षु समाधि स्थल संस्थान सिरियारी के हेम अतिथि भवन प्रांगण में 'शासनश्री' मुनि मणिलालजी के सान्निध्य में 265वां तेरापंथ स्थापना दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में नमस्कार महामंत्र के पश्चात् सामूहिक ऊँ भिक्षु जप का अनुष्ठान किया गया। मुनि चैतन्य कुमार 'अमन' ने इस अवसर पर कहा समाज और राष्ट्र में अनेक प्रकार की क्रान्ति होती रहती है। हरित क्रान्ति, जल क्रान्ति, अन्न क्रान्ति आदि, किन्तु धर्मक्षेत्र में आचार के प्रति होने वाली यह विशेष क्रान्ति है। आचार्य भिक्षु की धर्म क्रान्ति का फलित है- तेरापंथ। तेरापंथ एक आचार एक विचार और एक आचार्य केन्द्रित है। तेरापंथ आज्ञा, अनुशासन, मर्यादा और व्यवस्था इन चार पावों पर खड़ा है। तेरापंथ का महल जिसमें सात सकार यानि शिक्षा, शोध, साधना, सेवा, सहयोग, सहानुभूति और सहिष्णुता निरन्तर चलती है। मुनिश्री ने आगे कहा- आज गुरुपूर्णिमा है। भारतीय परम्परा में भगवान से भी अधिक गुरु को महत्त्व दिया गया है, क्योंकि गुरु ही होते हैं जो शिष्य को भवसागर से पार उतार देते हैं। मुनि धर्मेशकुमारजी ने कहा- आचार्य भिक्षु दूरदृष्टा आचार्य थे। उन्होंने आज के दिन तेरापंथ की स्थापना की। उन्होंने धर्मसंघ में मर्यादा का सूत्रपात किया।

एक आचार्य के नेतृत्व में चलने वाला यह तेरापंथ जो मात्र सात साधुओं से प्रारंभ हुआ, जिसमें आज सात सौ से अधिक साधु साध्वियां तथा लाखों श्रावक-श्राविकाएं अपनी धर्मसाधना कर रहे हैं। इस अवसर पर भिक्षु संस्थान के व्यवस्थापक महावीर सिंह, तेजरतन चौरड़िया, जया सामसुखा ने गीत एवं विचार प्रस्तुत किए।

रायपुर

आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि सुधाकरकुमारजी के सान्निध्य में 265 वें तेरापंथ स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में लाल गंगा पटवा भवन में विशेष आयोजन किया गया। मुनिश्री ने आचार्य श्री भिक्षु एवं तेरापंथ के गौरवमय इतिहास से उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं को अवगत करवाया। गुरु पूर्णिमा के महत्व को समझाते हुए मुनिश्री ने कहा कि गुरु शब्द दो शब्दों से मिलकर निर्मित होता है, जिसका अर्थ होता है अंधकार से प्रकाश की ओर। गुरु हमारे जीवन को सही व विकास की ओर ले जाने के पथ प्रदर्शक की भूमिका निर्वहन करते हैं। मुनि नरेशकुमार जी ने गीतिका का संगान किया। सभा अध्यक्ष गौतम गोलछा ने अपने विचार रखे। तेरापंथ युवक परिषद्, रायपुर द्वारा मंगलाचरण किया गया।

भाई-बहन के पवित्र त्यौहार रक्षाबंधन पर विशेष

सत्यं, शिवं, सुन्दरम् का प्रतीक पर्व – 'रक्षाबंधन'

● मुनि चैतन्य कुमार 'अमन' ●

पवित्र प्रेम स्नेह और सौहार्द भाव को बढ़ाने वाला पर्व है रक्षाबंधन। भारतीय परम्परा में अनेक पर्व हैं, जिसमें रक्षाबंधन का पर्व अपने आप में विशिष्ट कहलाता है। रक्षा शब्द विश्व इतिहास में महत्त्वपूर्ण रहा है। प्रत्येक व्यक्ति में सुरक्षा की भावना रहती है, इसीलिए इसे मानव जीवन के लिए प्राण, त्राण, आश्वास, विश्वास तथा सत्यं शिवं सुन्दरम् का प्रतीक माना गया है। जहाँ एक गृहस्थ व्यक्ति शरीर, सत्ता, सम्पदा, परिवार तथा संबन्धों की सुरक्षा पर ध्यान देता है तो एक आध्यात्मिक और धार्मिक जीवन जीने वाले के लिए आत्म सुरक्षा सर्वोपरि है।

आज के इस भौतिकता की चकाचौंध में मानव धन को सुरक्षित रखने व बढ़ाने में अपनी शक्ति का उपयोग करता है। अथवा परिवार, सत्ता, सम्पदा की सुरक्षा करता है। जबकि बहुत कम लोग होते हैं जो धर्म व आत्मरक्षा का प्रयत्न करते हैं। अध्यात्म के मनीषियों ने कहा है - 'अप्पा खलु सययं रखियव्वो' - तुम संयम के द्वारा आत्मा को सुरक्षित रखो अथवा 'धर्मो रक्षति रक्षितः' - तुम धर्म की रक्षा करो, धर्म भी तुम्हारी रक्षा करेगा। आज व्यक्ति धन की रक्षा के लिए तो न्याय नीति सबको गौण कर देता है। यह चिंतनीय प्रश्न है।

इतिहास साक्षी है कि व्यक्ति ने अपने राष्ट्र की सुरक्षा के लिए कितने संघर्ष किए है किन्तु रक्षा का मूल हार्द है- जीवन में प्रेम, दया, करुणा, अहिंसा, समन्वय, सहयोग की चेतना का जागरण हो जो कि कटु जीवन में मधुरता का संचार करे तथा सम्पूर्ण विश्व में भाईचारे को स्थापित करे। ₹वसुधैव कुटुम्बकम₹ सम्पूर्ण विश्व को परिवार की उपमा से उपमित करने वाला रक्षाबंधन का यह पर्व जैन और वैदिक दोनों परम्पराओं में समान रूप से महत्त्व रखता है। जन जीवन को नैतिकता, प्रामाणिकता और चरित्र निष्ठा का संदेश देने वाला यह पर्व आनंददायी व मंगलकारी है। इसके संबन्ध में प्राप्त कथानक विचारों की व्यापकता लिए हुए है।

लाखों-करोड़ों भारतवासी चाहे वे जैन, बौद्ध, सिख, सनातन तथा मुस्लिम धर्म में भी विश्वास करते है। उसमें भी यह पर्व पर भाई-बहनों के प्यार को दर्शाता है किन्तु शनैः शनैः पर्वो के साथ कुछ भावनाओं में विकृतियों का मनोभाव जुड़ने के कारण विश्वास का दायरा सिमट रहा है। जिस पिता, भाई अथवा अन्य संबन्धियों से बहन रक्षा की आशा करती रही है आज उससे भी अपने आपको असुरक्षित महसूस करने लग गई है। आए दिन अखबारों में छपने वाली घटनाएं पढ़कर अथवा सुनकर ऐसा लगता है जीवन कहीं पर भी सुरक्षित नहीं है। आज का इंसान पर्व की पवित्र भावनाओं को भूलता जा रहा है, केवल लकीर के फकीर बनते जा रहे है। राखी के कच्चे धागे जो बहन द्वारा भाई की कलाई पर बांधे जा रहें हैं वह मात्र औपचारिक उपकरण बन रहा है। जहां भाई की सोच अच्छी व कीमती राखी पर अटक रही है तो बहन का ध्यान मात्र धन पर केन्द्रित रह जाता है। वह देखती है कि भाई कितना पैसा (धन) दे रहा है। परन्तु इसके पीछे जो प्यार, स्नेह, सौहार्द का भाव होना चाहिए वह भुलाया जा रहा है। यदि बहन भाई दोनों अपना नैतिक कर्तव्य समझ कर अपने आपको आरक्षित करें तो पारिवारिक प्रेम, सामाजिक समरसता तथा राष्ट्रीय हितों में अभिवृद्धि हो सकती है। धर्म और अध्यात्म के क्षेत्र में जरुरी है कि वे अपने आग्रह विग्रह कदाग्रह को त्याग कर नैतिकता और चरित्र निष्ठा के द्वारा संयम भावना को सुरक्षित करें। संयमः खलु जीवनम् - संयम ही जीवन है इस उद्घोष के साथ संकल्प करे। जिससे यह लौकिक पर्व अलौकिक बन कर सबकी सुरक्षा में निमित्त बन सके। पर्व प्रतिवर्ष आते हैं और एक सन्देश मानवता के नाम पर छोड़ जाते हैं। उन पर्वों की सार्थकता तभी सिद्ध हो सकती है जब व्यक्ति इसकी मूल भावनाओं को आत्मसात करे अन्यथा इन पर्वों का कोई औचित्य नहीं रह जाता जो कि वर्तमान समय में देखा जा रहा है।

अतः आवश्यकता है भारत जैसे धार्मिक आध्यात्मिक कहलाने वाले राष्ट्र में पर्वों के महत्व को समझें और उसे उसी रूप में आस्था के साथ अपनाने का भरसक प्रयास करें।

भाई बहन के निर्मल प्रेम का प्रतीक है रक्षाबंधन

● मुनि कमलकुमार ●

वर्षभर में अनेक पर्व मनाए जाते हैं। प्रत्येक पर्व अपनी विशेषता लिए होता है। हमें हर पर्व की उपयोगिता को समझने का प्रयास करना चाहिए। पर्व मुख्य रूप से दो प्रकार के होते हैं - आध्यात्मिक व लौकिक। आध्यात्मिक पर्व आत्मोन्नति का लक्ष्य लेकर मनाए जाते हैं, जैसे पर्युषण पर्व नितांत आध्यात्मिक पर्व है। इस पर्व पर तप, जप, सामायिक, मौन, खाद्य संयम, स्वाध्याय, ध्यान, आत्मचिंतन का क्रम रहता है, जिससे व्यक्ति आत्मविकास की दिशा में गतिमान बनता है। दूसरे पर्व जैसे अक्षय तृतीया, दीपावली भी जैन धर्म में जप, ध्यान आदि के साथ मनाए जाते हैं। अक्षय तृतीया पर वर्षीतप का पारणा, दीपावली पर्व पर तेला, पौषध, प्रतिक्रमण, भगवान महावीर का स्मरण, जाप आदि का क्रम रहता है। इसलिए ये पर्व भी आध्यात्मिक ऊंचाई लिए हुए हैं।

होली, रक्षाबंधन आदि पर्व भौतिक होते हुए भी अपनी महत्ता लिए हुए हैं। रक्षाबंधन पर्व भाई बहन के निर्मल प्यार का संबंध लिए हुए मनाया जाता है। यह पर्व हिंदू संस्कृति का प्रतीक कहलाता है। भाई बहन की अवस्था नहीं देखी जाती। शिशु, किशोर, युवा, प्रौढ़, वृद्ध किसी भी अवस्था के क्यों ना हो उनमें निर्मल आत्मीय संबंध रहे। आज यह पर्व कुछ विकृत हो रहा है। जो बहन भाई के हाथ में मौली बांधती थी, उसमें जो आनंद बढ़ता था वह आज की कीमती राखियों से कम प्रतीत हो रहा है। उस समय राखी पर भाई अपनी बहन को कुछ पैसे ही देता था परन्तु आज तो कुछ और ही हो गया है। सैकड़ों ही नहीं हजारों-लाखों की राखियां आने लगी हैं और बहन का ध्यान भी प्रेम की जगह पैसों पर रहता है। अगर सौ की राखी बांधे तो उससे ज्यादा ध्यान भाई से पैसे पाने पर रहता है। उस समय सबके एक समान मौली बांधी जाती थी परंतु आज मुंह देखकर राखी बांधी जाने लगी है। बहन देखती है यह भाई कितना देगा, यह भतीजा कितना देगा, उसी हिसाब से वह राखी बांधती है, जबकि इस पर्व का लक्ष्य था कि मैं मेरे भाई को इसलिए राखी बांधू कि मेरा भाई विपत्ति काल में मेरी रक्षा करे। इससे परिवार और समाज को भी यह प्रेरणा मिले कि भाई हो तो ऐसा हो कि अपनी बहन की समस्या को समझता ही नहीं बल्कि उसके निवारण में भी सहभागी बनता है। अर्थ परक नहीं भाई बहन दोनों कर्तव्य परायण बनेंगे तभी इस पर्व की गरिमा महिमा सुरक्षित रहेगी।

भाई–बहन के स्नेह का पर्व रक्षाबन्धन

● साध्वी कनकरेखा ●

भारतीय संस्कृति पर्व प्रधान है। रक्षाबंधन लोक संस्कृति से जुड़ा हुआ पर्व है। जो भारत के सभी प्रान्तों, शहरों व गांवो में मनाया जाता है। यह पर्व निश्चल प्रेम व सौहार्द का सूचक है। यह मन में विराट भावना को जगाता है। इस दिन बहन भाई को राखी बांधकर स्नेह के साथ उज्जवल भविष्य एवं दीर्घायु की मंगल कामना करती है। भाई हर स्थिति में बहन को सुरक्षा का आश्वासन देता है। यह कच्चा धागा है लेकिन इसमें त्याग और बलिदान की भावना छिपी हुई है। भाई बहिन के पवित्र रिश्तों को उजागर करने वाला यह पर्व श्रावण पूर्णिमा को मनाया जाता है।

रक्षा बन्धन पर्व की शुरूआत के विषय में वेद, पुराणों में अनेक घटनायें मिलती है। यह भी माना जाता था कि यह पर्व सिर्फ भाई बहन तक ही सीमित नही था। सुरक्षा संकल्प के साथ ऋषि-मुनि राजाओं के सूत्र बांधते थे। पत्नियां पति के, व्यापारी बही खाते पर राखी बांधती तथा ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्यों के हाथ पर राखी बांध कर धर्म की रक्षा का वचन लेते।

प्रत्येक पर्व व त्यौहार के पीछे कोई घटना अवश्य होती है। रक्षाबन्धन भी इससे अछूता नही हैं। कहा जाता है कि एक बार देवता और असुरों के बीच युद्ध चल रहा था। यह युद्ध बारह वर्षों तक चलता रहा। इसमें देवता हारने लगे तो असुरों को जीत के आसार दिखाई देने लगे। इन्द्र भी निराश होकर सोचने लगे कि अब वह क्या करें, समाधान के लिए अपने गुरु बृहस्पति से विचार विमर्श किया। बृहस्पति ने इन्द्र की वेदना सुनकर उसे रक्षा विधान करने को कहा। इन्द्राणी ने श्रावण पूर्णिमा को बीजों से शास्त्रीय विधि से एक रक्षा कवच तैयार करवाया तथा उसे इन्द्र की दाहिनी कलई पर बांधकर युद्ध में लड़ने के लिए भेज दिया इसके प्रभाव से दानव भाग खड़े हुए और इन्द्र की विजय हुई। माना जाता है कि राखी बांधने का सूत्रपात यही से शुरू हुआ। एक बार श्री कृष्ण के हाथ में चोट लग गई जिससे खून की धार बहने लगी। द्रौपदी से यह देखा नहीं गया उसने तुरन्त अपनी साड़ी का पल्ला फाड़कर हाथ में बांध दिया जिससे खून बंद हो गया। समयान्तर बाद जब दुर्योधन ने द्रोपदी का चीरहरण किया तब श्री कृष्ण इस बंधन का उपकार चुकाया। यह प्रसंग भी रक्षाबन्धन की महत्ता प्रतिपादित करता है।

मध्यकालीन इतिहास की घटना है। मुगलकालीन शासन में गुजरात शासक बहादुरशाह ने चित्तौड़ पर आक्रमण किया। चित्तौड़ की महारानी कर्णावती ने सुरक्षा के लिए दिल्ली के मुगल बादशाह हुमायूं को राखी भेजकर भाई बनाया। हुमायूं ने राखी तहेदिल से स्वीकार कर चित्तौड़ को बहादुरशाह के आक्रमण से बचाया और राखी का मोल चुकाया। तब से यह प्रथा प्रचलित है।

रक्षाबंधन की पवित्र परम्परा को हम औपचारिकता के साथ न जोडे। स्वार्थ, अहं और प्रदर्शन की रस्म अदा न करें। शील, चारित्र और सदाचार के रक्षा कवच का निर्माण करने वाले राखी के उपहार को स्वीकारें जिससे जिन्दगी का हर पल प्रेम, सौहार्द और मैत्री के स्वस्तिक रचता रहें।

संबोधि

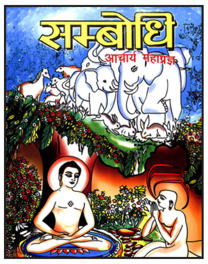

गृहस्थ-धर्म प्रबोधन

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

भगवान् प्राह

२१. अर्थजानर्थजा चेति, हिंसा प्रोक्ता मया द्विधा।
अनर्थजां त्यजन्नेष, प्रवृत्तिं लभते सतीम्॥

भगवान ने कहा–मैंने हिंसा के दो प्रकार बतलाए हैं–अर्थजा और अनर्थजा। गृहस्थ अनर्थजा–अनावश्यक हिंसा का परित्याग कर सकता है और जितनी मात्रा में वह उसका त्याग करता है, उतनी मात्रा में उसकी प्रवृत्ति सत् हो जाती है।

२२. आत्मने ज्ञातये तद्वद्, राज्याय सुहृदे तथा।
या हिंसा क्रियते लोकैरर्थजा सा किलोच्यते।।

अपने लिए, परिवार, राज्य और मित्रों के लिए जो हिंसा की जाती है, वह अर्थजा हिंसा कहलाती है।

२३. परस्परोपग्रहो हि, समाजालम्बनं भवेत्।
तदर्थं क्रियते हिंसा, कथ्यते सापि चार्थजा॥

परस्पर एक–दूसरे का सहयोग करना समाज का आधारभूत तत्त्व है। इस दृष्टि से समाज के लिए जो हिंसा की जाती है, उसे भी अर्थजा हिंसा कहा जाता है।

२४. कुर्वन्नप्यर्थजां हिंसां, नासक्तिं कुरुते दृढाम्।
तदानीं लिप्यते नासौ, चिक्कणैरिह कर्मभिः॥

अर्थजा हिंसा करते समय जो प्रबल आसक्ति नहीं रखता, वह चिकने कर्म–परमाणुओं से लिप्त नहीं होता।

२५. हिंसा न क्वापि निर्दोषा, परं लेपेन भिद्यते।
आसक्तस्य भवेद् गाढोऽनासक्तस्य भवेन्मृदुः।।

हिंसा कहीं भी निर्दोष नहीं होती परन्तु उसके लेप में अंतर होता है। आसक्त का लेप गाढ़ और अनासक्त का लेप मृदु होता है।

हिंसा हिंसा है। वह कभी अहिंसा नहीं होती और अहिंसा कभी हिंसा नहीं होती। अहिंसा अबंधन है और हिंसा बंधन। अहिंसा में भावों की तरतमता नहीं होती। उसका सदा पवित्र भावनाओं से संबंध है। हिंसा में राग और द्वेष की नियतता है। देखना यही है कि राग और द्वेष का प्रवाह कितना तीव्र है। एक व्यक्ति साधारण कर्म करता हुआ भी उसमें अनुरक्त होता है और एक असाधारण कार्य करता हुआ भी उसमें आसक्त नहीं रहता।

महाराज जनक की एक घटना से यह स्पष्ट हो जाता है। एक बार जनक किसी अन्य राजा के अतिथि बने। वे कुछ दिन वहां रुककर जब जाने लगे तो राजा ने अतिथि से पूछा 'यहां आपको कैसा लगा?' जनक का भी संक्षिप्त-सा सहज उत्तर था-'बहुत बड़े भव्य महल में एक तुच्छ जीवन।' वहां से आते हुए मार्ग में एक साधु की कुटिया थी। कुछ दिन वहां रहने का भी सौभाग्य मिला। वे सत्संग, ध्यान, भजन आदि नियमित कार्यों में सतत भाग लेते रहे। जब वहां से विदा होने लगे तो संत ने सहज प्रश्न किया- 'यहां आपको कैसा लगा?' जनक का भी संक्षित उत्तर था 'एक छोटी-सी झोंपड़ी में एक महान् जीवन।'

जिस कार्य में आसक्ति की मात्रा अधिक होती है वहां कर्म का बंधन भी दृढ़ होता है, उसका फल भी कटुक होता है। जहां आसक्ति नहीं है वहां कर्म का बंधन गाढ़ नहीं होता और फल भी दारुण नहीं होता। असत् कर्म से बंधन अवश्य होता है, भले वह अनासक्तिपूर्वक हो या आसक्तिपूर्वक। जैन दर्शन में अनासक्ति का पूर्णरूप वहां निखार पाता है जहां सत् और असत् के प्रति भी आकांक्षा छूट जाती है। सत् कर्म में भी पुण्य कर्म प्रवाहित होता रहता है किन्तु उसका फल दारुण नहीं होता। आसक्ति की तीव्रता और अतीव्रता से उसके फल में वैसा ही रस पड़ता है।

(क्रमशः)

श्रमण महावीर

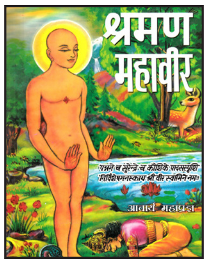

ध्यान, आसन और मौन

(पिछला शेष)

भगवान् की समत्व-साधना इतनी सुदृढ़ हो गई है कि अब उन्हें जैसा भी भोजन मिलता है, उसे समभाव से खा लेते हैं। उन्हें कभी सव्यंजन भोजन मिलता है और कभी निर्व्यजन। कभी ठंडा भोजन मिलता है और कभी गर्म। कभी पुराने कुल्माष बुक्कस और पुलाक जैसा नीरस भोजन मिलता है और कभी परमान्न जैसा सरस भोजन। पर इन दोनों प्रकारों में उनकी मानसिक समता विखंडित नहीं होती।

एक बार भगवान् ने रूक्ष भोजन का प्रयोग प्रारम्भ किया। इस प्रयोग में वे सिर्फ तीन वस्तुएं खाते थे–कोदू का ओदन, बैर का चूरण और कुल्माष। यह प्रयोग आठ महीने तक चला। भगवान् ने रसानुभूति का अधिकार रसना को दे दिया। मन उसके कार्य में हस्तक्षेप किया करता था। उसे अधिकार–मुक्त कर दिया।

ध्यान, आसन और मौन

मैं ध्यान-कोष्ठ में प्रवेश पा रहा था। स्थूल जगत् से मेरा सम्बन्ध विच्छिन्न हो चुका था। मेरा ध्येय था-महावीर की ध्यान-साधना का साक्षात्कार। सूक्ष्म-जगत् से संपर्क साधकर मैं आचार्य कुंदकुंद की सन्निधि में पहुंचा। मैंने जिज्ञासा की, 'महाप्रज्ञ। आपने लिखा है कि जो व्यक्ति आहार-विजय, निद्रा-विजय और आसन-विजय को नहीं जानता, वह महावीर को नहीं जानता, उनके धर्म को नहीं जानता। क्या महावीर के धर्म में ध्यान को कहीं अवकाश नहीं है?'

आचार्य ने सस्मित कहा, 'यदि ध्यान के लिए अवकाश न हो तो आहार, निद्रा और आसन की विजय किसलिए?'

'महाप्रज्ञ!' इसीलिए मेरी जिज्ञासा है कि आपने इनकी सूची में ध्यान को स्थान न देकर क्या उसका महत्त्व कम नहीं किया है?

'नहीं, मैं ध्यान का महत्त्व कम कैसे कर सकता हूं?'

'तो फिर उस सूची में ध्यान का उल्लेख क्यों नहीं?'

'वह ध्यान के साधनों की सूची है। आहार, निद्रा और आसन की विजय ध्यान के लिए है। फिर उसमें ध्यान का उल्लेख मैं कैसे करता?'

'क्या ध्यान साधन नहीं है?'

'वह साधन है। और आहार, निद्रा तथा आसन-विजय साधन का साधन है।' 'यह कैसे ?'

ध्यान आत्म-साक्षात्कार का साधन है। आहार, निद्रा और आसन का नियमन ध्यान का साधन है। भगवान् ने ध्यान की निर्बाध साधना के लिए ही नियमन किया था।'

'महाप्रज्ञ! आप अनुमति दें तो एक बात और पूछना चाहता हूं?' 'वह क्या?'

'आपने महावीर के ध्यान का अर्थ आत्मा को देखना किया है। क्या ध्यान का अर्थ सत्य का साक्षात्कार नहीं है?'

'आत्म-दर्शन और सत्य-दर्शन क्या भिन्न है?'

'महावीर ने चेतन और अचेतन-दो द्रव्यों का अस्तित्व प्रतिपादित किया है।

'सत्य-दर्शन में वे दोनों दुष्ट होते हैं। आत्म-दर्शन में केवल चेतन ही दृष्ट होता है। फिर दोनों भिन्न कैसे नहीं?'

'तुम मेरा आशय नहीं समझे। अचेतन का दर्शन उसी को होता है, जिसका चैतन्य अनावृत्त हो जाता है और चैतन्य का अनावरण मन को चैतन्य में विलीन करने से होता है। इसलिए मैंने महावीर के ध्यान का अर्थ–आत्मा को देखना, मन के उद्गम को देखना–किया है।'

(क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

ज्ञान-प्राप्ति का प्रयोग

'कई आचार्य वयोवृद्ध होते हुए भी स्वभाव से ही मन्द (अल्पप्रज्ञ) होते हैं और कई अल्पवयस्क होते हुए भी श्रुत और बुद्धि से सम्पन्न होते हैं। आचारवान् और गुणों में सुस्थितात्मा आचार्य, भले फिर वे मंद हों या प्राज्ञ, अवज्ञा प्राप्त होने पर अवज्ञा करने वाले की गुणराशि को उसी प्रकार भस्म कर डालते हैं जिस प्रकार अग्नि ईंधन राशि को।'

यहां आचार अथवा चरित्र की महत्ता स्पष्ट परिलक्षित होती है, ज्ञान की यहां मुख्यता नहीं है। जो व्यक्ति चरित्रसम्पन्न और गुणसम्पन्न है, फिर चाहे वह विभिन्न विषयों का विद्वान् न भी हो, उसका कल्याण हो सकता है। और दूसरा एक व्यक्ति जो बौद्धिक, विद्वान्, कवि और वक्ता है परन्तु आचारसम्पन्न नहीं है, वह संसार में परिव्रजन करता है।

पंडित के मन में प्रश्न उठा कि राजा मेरा इतना सम्मान करता है, मुझे प्रणाम करता है, उसका कारण मेरी विद्वत्ता है अथवा मेरा आचार? इसकी जांच करने के लिए उसने एक दिन राजमहल में चोरी की। सप्रमाण राजा के पास शिकायत पहुंच गई। दूसरे दिन पण्डित राजसभा में गया तो राजा ने बिलकुल सम्मान नहीं किया। पंडित के द्वारा पूछे जाने पर राजा ने कहा- पंडितजी! आप सम्मान के लायक हैं भी तो? ऐसा जघन्य काम आप करते हैं! पण्डित समझ गया कि सम्मान मेरी विद्या से ज्यादा आचार का हो रहा था। विद्या तो आज भी है पर चरित्र के अभाव के कारण सम्मान अपमान में बदल गया।

इस संदर्भ में यह स्पष्ट लगता है कि चरित्र का स्थान पहला है और ज्ञान का स्थान दूसरा। निष्कर्ष यह है कि जो ज्ञान चरित्र का विकास करने वाला है उसका स्थान पहला है। जो ज्ञान चरित्र से सीधा संबंधित नहीं है उसका स्थान चरित्र के बाद में है। निर्जरा के बारह भेदों में दसवां है स्वाध्याय। उसके गौरव का गान करने वाला एक श्लोक मननीय है-

बारसविहम्मि वि तवे, सब्भिंतरबाहिरे कुसलदिट्ठे।
नय अत्थि न वि अ होही, सज्झायसमं तवोकम्मं।।

'कुशल द्वारा उपदिष्ट बाह्य और आभ्यन्तर भेद वाला बारह प्रकार का तप है। उसमें स्वाध्याय के समान न तो कोई तप है और न ही होगा।' स्वाध्याय का इतना महत्त्व क्यों? इसका एक कारण मुझे यह लगता है कि स्वाध्याय प्रकाशकर है। उससे वह रोशनी मिलती है जो करणीय और अकरणीय का स्पष्ट ज्ञान करा देती है, साधना के मार्ग को प्रशस्त कर देती है। स्वाध्याय श्रुत की परम्परा को अविच्छिन्न बनाए रखता है। उसमें स्वार्थ, परार्थ और परमार्थ तीनों का समावेश देखने को मिलता है जो कि मेरे ख्याल में निर्जरा के अन्य ग्यारह भेदों में से किसी में भी नहीं है। स्वाध्याय परमार्थ इसलिए है कि उससे परम की प्राप्ति होती है, कर्म निर्जरा होती है। स्वार्थ (स्वयं के लिए, अपने लिए) इसलिए है कि उससे अपना ज्ञान बढ़ता है। परार्थ (औरों के लिए) इसलिए है कि उससे दूसरों का ज्ञान भी बढ़ता है, और मार्गदर्शन भी होता है। श्रुत ज्ञान को स्वार्थ और परार्थ दोनों माना गया है जबकि शेष चार ज्ञान केवल स्वार्थ माने गए हैं। स्वाध्याय और श्रुतज्ञान में एकता देखी जा सकती है।

स्वाध्याय : एक विश्लेषण

दुनिया का हर प्राणी विकासप्रिय होता है। संभव है कुछ परिस्थितियों के कारण व्यक्ति विकास के सोपान पर आरूढ़ न भी हो सके पर उन्नति सभी की आकांक्षा का केन्द्र बनी रहती है। हमारे जीवन विकास का एक अमोघ साधन है- स्वाध्याय।

स्वाध्याय के महत्त्व को इससे भी बल मिलता है कि उत्तराध्ययन सूत्र में मुनि की प्राचीन अहोरात्रचर्या में चार प्रहर (दिन और रात के प्रथम और अंतिम प्रहर) स्वाध्याय के लिए रखे गए हैं जबकि ध्यान, भिक्षा व निद्रा इन तीनों को शेष अर्धभाग में समायोजित किया गया है।

जैन सिद्धान्त दीपिका में स्वाध्याय की परिभाषा दी गई है- **श्रुतस्याध्ययनं स्वाध्यायः** श्रुत (अध्यात्मशास्त्र) का अध्ययन स्वाध्याय है।

स्वाध्याय का स्वरूप

स्वाध्याय शब्द की तीन तरह से व्याख्या हो सकती है-
१. सु + आ + अध्याय।
सु- अच्छा, आ समग्रता से,
अध्याय = अध्ययन।
अच्छे (आध्यात्मिक) ग्रन्थों का समग्रता से अध्ययन करना स्वाध्याय है।

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री रायचन्दजी युग

मुनिश्री शिवलालजी (कुंदवा) दीक्षा क्रमांक : 117

मुनिश्री प्रकृति से कोमल, सरस व्याख्यानी, चर्चावादी और बड़े तपस्वी थे। आपने उपवास, बेले आदि बहुत किये। 9 से ऊपर की संख्या इस प्रकार है-9/1, 16/1, 20/1, 21/1, 22/1, 25/1, 29/1, 30/2, 33/1, 41/1, 50/1, 51/1, 53/1, 60/1, 90/1
मुनिश्री उष्णकाल में आतापना लेते। शीतकाल में लगभग 23 वर्ष केवल एक पछेवड़ी में रहकर शीत सहन किया।

– साभार: शासन समुद्र –

अगस्त 2024
सप्ताह के विशेष दिन

19 अगस्त
भगवान मुनिसुव्रत च्यवन कल्याणक एवं रक्षाबंधन व पक्खी

23 अगस्त
आचार्यश्री माणकलाल जी जन्म दिवस

24 अगस्त
भगवान शांतिनाथ च्यवन कल्याणक

25 अगस्त
भगवान चन्द्रप्रभु निर्वाण कल्याणक

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स समाचार प्रेषकों से निवेदन

समाचार केवल वर्ड या पीडीएफ फॉर्मेट में abtyptt@gmail.com ईमेल पर ही भेजें।

निवेदक : अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

❖ आदमी को पुण्य की भी इच्छा नहीं करना चाहिए। उसे हेय और उपादेय को अच्छी तरह जानकर हेय को छोड़ने और उपादेय को ग्रहण करने का प्रयत्न करना चाहिए। – आचार्य श्री महाश्रमण

तेरापंथ टाइम्स
ऑनलाईन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.com

संक्षिप्त खबर

सामूहिक पचरंगी कार्यक्रम का किया गया आयोजन

जयपुर। 'शासनश्री' साध्वी मधुरेखा जी के सान्निध्य में भिक्षु साधना केन्द्र, श्याम नगर में सावन महीने के प्रथम पक्ष में 2 सामूहिक पचरंगी का कार्यक्रम समायोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ कन्यामंडल के मंगलाचरण से हुआ। साध्वीश्री ने कहा- जो कुछ भी हो रहा है सब गुरु कृपा से होता है। हम तो निमित्त मात्र हैं। इस अवसर पर भिक्षु साधना केन्द्र समिति के अध्यक्ष कमल सेठिया, सभा की ओर से राजेश मनोत, तेरापंथ महिला मंडल, सी स्कीम की अध्यक्षा प्रज्ञा सुराना, युवक परिषद के मंत्री अभिषेक भंसाली, किशोर मंडल के पुलकित बैद ने शुभकामना स्वर प्रस्तुत किए। महिला मंडल सी स्कीम की बहनों ने सास-बहू का रोचक संवाद प्रस्तुत किया। साध्वीवृंद ने समवेत स्वरों में सुंदर गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन नीरू पुगलिया ने किया।

कैंसर अवेयरनेस कैंप

पाली। अभातेमम के तत्वावधान में तेरापंथ महिला मंडल पाली द्वारा कैंसर जागरूकता अभियान के अंतर्गत कैंसर अवेयरनेस कैंप का आयोजन तेरापंथ सभा भवन में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मुनि सुमतिकुमारजी द्वारा नमस्कार महामंत्र से की गई। तेरापंथ महिला मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत के संगान के साथ मंगलाचरण किया। मुनिश्री ने कहा कि हमारा खान-पान सात्विक होना चाहिए। स्वास्थ्य के संबंध में मुनिश्री ने बताया हमें बार-बार भोजन, क्रोध में भोजन से बचना चाहिए। हमें बाहर की चीजों का, मैदा, शक्कर, मावा, ताली हुई खाद्य वस्तुओं का उपयोग कम करना चाहिए। तेरापंथ महिला मंडल की मंत्री सीमा मरलेचा ने डॉ. दिव्या मित्तल एवं सभी बहनों का स्वागत करते हुए वर्ष भर चलने वाले कैंसर जागरूकता अभियान के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम की मुख्य वक्ता डॉ. दिव्या मित्तल ने बहुत सरल शब्दों में ब्रेस्ट और सर्वाइकल कैंसर के बारे में विस्तार से बताते हुए कैंसर के लक्षण और उसके रोकथाम के उपाय बताये। कार्यक्रम का कुशल संचालन संयोजिका गरिमा चोपड़ा और मोनिका सालेचा के द्वारा किया गया। आभार ज्ञापन संयोजिका हेमलता सोनीमंडिया द्वारा किया गया।

रक्तदान शिविर का आयोजन

सूरत। तेरापंथ युवक परिषद, सूरत द्वारा द्वितीय रक्तदान कैंप का संयम विहार, चातुर्मास प्रवास स्थल, वेसु में आयोजन किया गया। इस रक्तदान शिविर में आचार्य श्री महाश्रमण चातुर्मास व्यवस्था समिति अध्यक्ष संजय सुराणा महामंत्री नानालाल राठौड़, अभातेयुप अध्यक्ष रमेश डागा एवं समस्त प्रबंधन मण्डल टीम की मुख्य उपस्थित रही। कैंप में स्मीमेर हॉस्पिटल के ब्लड बैंक की सहभागिता रही। इस रक्तदान कैंप में कुल 57 रक्त यूनिट एकत्रित हुए। तेयुप अध्यक्ष अभिनंदन गादिया एवं मंत्री सौरभ पटावरी, एमबीडीडी टीम एवम् कार्यकारणी सदस्यों का अथक श्रम रहा।

शपथ ग्रहण समारोह

पीलीबंगा। श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा पीलीबंगा के नवनिर्वाचित अध्यक्ष मालचंद पुगलिया को निवर्तमान अध्यक्ष हनुमान जैन और तेरापंथ युवक परिषद् के नवनिर्वाचित अध्यक्ष अंजन बोथरा को निवर्तमान अध्यक्ष सतीश पुगलिया ने नव दायित्व पर शपथ दिलवाई। दोनों अध्यक्षों ने अपनी कार्यकारणी को साध्वी सुदर्शनाश्रीजी के सान्निध्य में शपथ ग्रहण करवाई।

ज्ञानशाला उच्च जीवन जीने की प्रयोगशाला है

नई दिल्ली।

अणुव्रत भवन में गुरूग्राम का श्रावक समाज साध्वी कुन्दनरेखा जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला के पुनः प्रारंभ हेतु पहुंचा। इस अवसर पर लगभग 20 बच्चों की सहभागिता रही। साध्वीश्री ने बच्चों को प्रशिक्षण देते हुए कहा ज्ञानशाला का पुनः प्रारंभ समाज की जागरूकता का पर्याय बन रहा है। जिस समाज के बच्चे सद्संस्कारी होंगे, ज्योतिर्मय ज्योति से ज्योतित होंगे, वह समाज विकास के शिखर का स्पर्श कर सकता है।

ज्ञानशाला उच्च जीवन जीने की प्रयोगशाला है। यहां पर आने वाला हर बच्चा अन्य बच्चों से यूनिक होगा- यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी। साध्वीश्री ने आगे कहा- वर्तमान युग में बच्चों को सही मार्ग से भटकाने वाले अनेक रास्ते हैं। व्यसन परक जीवनशैली के चलते आज का मानव अपना अस्तित्व खो रहा है। ऐसे में ज्ञानशाला का संचालन अति आवश्यक है।

साध्वी सौभाग्ययशाजी ने कहा- बच्चे राष्ट्र की नींव हैं, ये जितने सुदृढ़ होंगे, राष्ट्र का भविष्य उतना ही उज्ज्वल होगा। संस्कार किसी भी दुनियां के मॉल में नहीं, माहौल से मिलते हैं। साध्वी कल्याणयशाजी संचालन करते हुए कहा- गुरुदेव श्री तुलसी ने सर्वांगीण विकास के लिए सुन्दर एवं महत्वपूर्ण अवदान ज्ञानशाला को दिया है। ज्ञानशाला से निकले हुए बच्चे न केवल स्वयं के लिए अपितु परिवार, समाज एवं राष्ट्र के लिए हितकारी होते हैं। तेरापंथ सभा दिल्ली के अध्यक्ष सुखराज सेठिया ने कहा ज्ञानशाला संस्कारशाला है, निर्माणशाला है और एक सुन्दर प्रयोगशाला है, जिसके माध्यम से नये-नये रूप सम्मुख आ रहे हैं।

महामंत्री प्रमोद घेड़ावत ने कहा- ज्ञानशाला तेरापंथ धर्म की सुन्दर पाठशाला है, जिसके माध्यम से भावी पीढ़ी का निर्माण स्पष्ट दिखाई देता है। ज्ञानशाला अन्तर्राष्ट्रीय प्रभारी सरोज छाजेड़, सम्पत नाहटा, विनोद बाफना, अशोक सुराणा आदि ने अपने विचारों की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम की शुरुआत में मंथन जैन ने महाप्रज्ञ अष्टकम् द्वारा मंगलाचरण किया। महासती गुलाबांजी के जीवन से सम्बधित एक घटना पर बच्चों की सराहनीय प्रस्तुति हुई। महिला मण्डल ने गीतिका की प्रस्तुति दी। विहाना जैन एवं प्रणीत जैन ने भी अपनी प्रस्तुति दी।

आत्मिक वैभव पाने का सुंदर अवसर है चातुर्मास

लुधियाना।

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी की विदुषी सुशिष्या साध्वी कनकरेखा जी के सान्निध्य में त्रिदिवसीय कार्यक्रम अखंड जप व तेले की तपस्या के साथ प्रारंभ हुआ। आचार्य भिक्षु जन्मोत्सव कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वी गुणप्रेक्षाजी, साध्वी संवरविभाजी व साध्वी हेमंतप्रभाजी के सुमधुर मंगलाचरण से हुआ। साध्वी कनकरेखाजी ने अपने वक्तव्य में कहा- आचार्य भिक्षु विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। जिनके बाह्य व्यक्तित्व से अधिक आकर्षक था आन्तरिक व्यक्तित्व। मर्यादा पुरुषोत्तम आचार्य भिक्षु का लक्ष्य था सत्य को पाना। वे सत्य के लिए जीए, सत्य ही उनकी अंतिम मंजिल बनी, साधना के पथ पर निरंतर गतिशील रहे। इस बीच आने वाली हर मुसीबतों को हंसते-हंसते सहन किया। तेरापंथ धर्मसंध के इतिहास में भिक्षु के अतुल पुरुषार्थ की अकथ कहानी स्वर्णाक्षरों में अंकित है। साध्वी गुणप्रेक्षाजी ने संयोजकीय वक्तव्य के साथ ऐतिहासिक घटना प्रसंग की चर्चा की। स्नेहा बरमेचा ने गीत प्रस्तुत किया।

चातुर्मासिक चतुर्दशी पर साध्वी कनकरेखाजी ने कहा- आत्मिक वैभव पाने का सुंदर अवसर है चातुर्मास। बहिर्यात्रा से अन्तर्यात्रा की ओर प्रस्थान करने का राजपथ है- चातुर्मास। हम भोग से त्याग की ओर, राग से विराग की ओर प्रस्थान कर आत्मा को पवित्र एवं निर्मल बनाएं। ज्ञान, दर्शन, चरित्र की आराधना के साथ जप-तप की साधना करें। हाजरी वाचन के पश्चात् साध्वीवृन्द ने चातुर्मासिक करणीय कार्यों की सुमधुर गीतिका से परिषद् को भाव-विभोर कर दिया।

265 वां तेरापंथ स्थापना दिवस का भव्य कार्यक्रम का शुभारंभ युवती बहनों के सुमधुर मंगलाचरण से हुआ। साध्वी कनकरेखाजी ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा- आज तेरापंथ का स्थापना दिवस, सत्य की स्थापना का दिन है, अहिंसा की स्थापना का दिन है। तेरापंथ धर्मसंघ को प्रथम गुरू मिले। गुरू हमारे जीवन के पथदर्शक हैं। वर्तमान में एक गुरु के नेतृत्व में तेरापंथ धर्मसंघ मानव धर्म के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त कर रहा है।

आज गुरुपूर्णिमा का दिन सभी धर्मों में गुरू का महत्त्व बताया गया है। साध्वी संवरविभाजी ने अपने विचार रखे, साध्वी गुणप्रेक्षाजी व साध्वी हेमंतप्रभाजी ने गीत की प्रस्तुति दी।

मानसिक स्वास्थ्य कार्यशाला का आयोजन

शिवकासी।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल् के निर्देशानुसार शिवकाशी तेरापंथ महिला मंडल द्वारा मेंटल हेल्थ कार्यशाला का आयोजन पूर्व अध्यक्ष सज्जन डागा के निवास स्थान पर किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र व प्रेरणा गीत से हुई। दिव्या आंचलिया ने स्वागत स्वर प्रस्तुत किए। मुख्य वक्ता डॉक्टर श्यामला ने बहुत ही सरल शब्दों में समझाया कि मानसिक बीमारी स्ट्रेस से होती है।

उन्होंने कहा हमेशा खुश रहें, एक दूसरे के संपर्क में रहें, अपने मन की बात किसी न किसी से जरूर करें, योग को हमेशा अपनी दिनचर्या में रखें, हेल्दी खाना लें और खास बात की खुद को अच्छा लगे वह काम जरुर करें, अपने लिए समय जरूर निकालें।

डॉ. श्यामला और उनकी टीम ने रोचक गेम के माध्यम से विषय की और प्रभावी प्रस्तुति की।

बहनों ने एक लघु नाटिका की प्रस्तुति दी। धन्यवाद ज्ञापन नेहा बरडिया ने किया।

आचार्य श्री भिक्षु के 299वें जन्म दिवस एवं 267वें बोधि दिवस पर विविध आयोजन

साउथ हावड़ा

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में आचार्य भिक्षु का 299वां जन्म दिवस व 267वां बोधि दिवस साउथ हावड़ा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा द्वारा प्रेक्षा विहार में तप-जप के साथ हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर उपस्थित जनसमूह को 'ज्योति का अवतरण - जागृति का शंखनाद' विषय पर संबोधित करते हुए मुनि जिनेशकुमार जी ने कहा- आचार्य भिक्षु का जीवन उदितोदित था। वे सिंह स्वप्न के साथ अपनी मां के गर्भ में आए और अंतिम क्षण तक सिंह गर्जना करते रहे। आषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी के दिन उस दिव्य ज्योति का अवतरण हुआ, जिसने जागृति का शंखनाद कर जैन शासन के अध्याय में एक नया इतिहास रच दिया। वे सूझबूझ के धनी, उपायज्ञ, आचार सम्पन्न व उदार विचार के धनी थे। वे क्रांतिकारी संगठन शिल्पी व निर्मल बुद्धि के धनी थे। मुनिश्री ने आगे कहा - आज जन्मदिन के साथ बोधि प्राप्ति का भी दिन है। आज के दिन आचार्य भिक्षु को राजनगर में तत्त्वज्ञान का बीज मिला था। आचार्य भिक्षु की धर्म क्रान्ति का पहला कदम बोधि दिवस नए प्रभात के उदय का दिन है। बोधि का अर्थ है- विवेक चेतना का जागरण। मुनिश्री की प्रेरणा से ऊं भिक्षु-जय भिक्षु का त्रिदिवसीय अखंड जप, तेला तप एवं नवरंगी तप का शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर मुनि परमानंद जी ने कहा आचार्य भिक्षु सकारात्मक सोच के धनी थे। मुनि कुणाल कुमारजी ने सुमधुर गीत का संगान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ कन्या मंडल द्वारा भिक्षु अष्टकम् के मंगल संगान से हुआ। संचालन मुनि परमानंद जी द्वारा किया गया।

पेटलावद

आचार्य श्री भिक्षु यदि जर्मनी में जन्म लेते तो कांट से अधिक प्रसिद्ध होते- साध्वी उर्मिलाकुमारी जी बोधि ज्ञानात्मक शक्ति होती है, यह आंतरिक ज्ञान होता है, महामना आचार्यश्री भिक्षु ने अपने अंतरज्ञान के प्रकाश से प्रज्ञा को जागृत किया। भीतरी ध्यान रश्मियों के प्रकाश से बोधि को जागृत किया, आंतरिक प्रज्ञा के आधार पर आपने दुनिया को अनुशासन के जो सूत्र दिए वो अद्भुत हैं। उपरोक्त विचार साध्वी उर्मिलाकुमारीजी ने तेरापंथ धर्मसंघ के प्रथम गुरु महामना आचार्य श्री भिक्षु के 299 वें जन्मोत्सव और 267 वें बोधि दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में तेरापंथ भवन में व्यक्त किए।

आपने मानवीय चेतना के तीन स्तर मन, बुद्धि और प्रज्ञा का विश्लेषण करते हुए कहा कि मन का काम है चिंतन, स्मृति और कल्पना करना। बुद्धि विवेक और निर्णय करती है और प्रज्ञा के द्वारा आत्मसाक्षात्कार और अनुभूति की जा सकती है। मन से ज्यादा दुर्लभ बुद्धि का विकास और बुद्धि से ज्यादा दुर्लभ प्रज्ञा का विकास है। इस अवसर पर साध्वी मृदुलयशाजी ने कहा कि महापुरुषों का जन्म बड़ी सादगी और त्याग तपस्या के साथ मनाया जाता है। आचार्य भिक्षु सत्य की कसौटी पर कसे हुए ऐसे महापुरुष थे, जिनके जीवन में कथनी-करनी की समानता थी। युगपुरुष वह होता है जो युग के स्रोत के विपरीत गति करते हुए सुविधावाद के मार्ग को छोड़कर स्वयं साधना कर युग को नया मार्गदर्शन देते हैं। उन्होंने उस युग में जिन मर्यादाओं का निर्माण किया वे आज भी बहुत उपयोगी हैं। कार्यक्रम का प्रारम्भ साध्वीवृंद के नमस्कार महामंत्रोच्चार से हुआ। इस अवसर पर साध्वी ऋतुयशाजी व साध्वी ज्ञानयशाजी ने युगल गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी ऋतुयशा जी ने किया।

265वें तेरापंथ स्थापना दिवस पर विविध आयोजन

साउथ हावड़ा

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तथा तेरापंथ सभा साउथ हावड़ा के तत्वावधान में 265 वां तेरापंथ स्थापना दिवस व गुरु पूर्णिमा कार्यक्रम हर्षोल्लास के साथ प्रेक्षा विहार में मनाया गया। इस अवसर पर मुनिश्री ने कहा भारतीय सस्कृति में गुरु का स्थान सर्वोपरि है। अज्ञान रूपी अंधकार का जो नाश करते है उन्हें गुरु कहते हैं। गुरु जीवन दाता, भाग्य विधाता, संयम दाता, समकित दाता व त्राता होते हैं। गुरु को पारसमणि की उपमा से उपमित किया गया है। गुरु को ब्रह्मा, विष्णु, महेश कहा गया है। गुरु की महिमा अपरंपार होती है। निष्काम, निस्वार्थ भाव से जो धर्म का मार्ग बताते हैं वे ही वास्तव में सच्चे गुरु होते हैं। जिसके जीवन में गुरु नहीं होते है उनका जीवन शुरु नही होता है।

मुनिश्री ने आगे कहा गुरु पूर्णिमा के दिन ही केलवा की अंधेरी में आचार्य भिक्षु ने भाव दीक्षा ग्रहण कर तेरापंथ की स्थापना की। उनके जीवन में अनेक संघर्ष आए। वे कष्टों की परवाह न करते हुए वे साधना व सत्य के मार्ग-पर चलते रहे। आचार्य भिक्षु ऊर्जा संपन्न गुरु थे। तेरापंथ के उद्भव में उनकी पापभीरुता अभय,व जागरुकता निमित्त बनी। उन्होंने नवीन संघ का समुचित संरक्षण करने के लिए तीन काम, विशेष रूप से किए- मूल्यों की स्थापना, संघ संगठन, साहित्य सृजन। मुनि परमानंद जी ने कहा- आचार्य भिक्षु साधना के शिखर पुरुष थे। मुनि कुणालकुमार जी ने मधुर गीत का संगान किया। आभार मंत्री बसंत पटावरी ने व संचालन मुनि परमानंद जी ने किया। वर्षावास स्थापना अनुष्ठान मुनि परमानंद जी ने करवाया।

राजलदेसर

आषाढ़ी पूर्णिमा का दिन तेरापंथ धर्म संघ के लिए एक ऐतिहासिक दिन है। आचार्य भिक्षु सत्य के परम उपासक थे। भगवान महावीर के सिद्धांतों पर साध्वाचार का शुद्ध पालन करने के लिए वे स्थानकवासी संप्रदाय से पृथक हुए और भाव दीक्षा ग्रहण की। एक आचार, एक विचार और एक प्ररूपणा की अनोखी विशेषता लिए हुए यह तेरापंथ जन-जन का पंथ बन गया। तेरह साधु और तेरह श्रावकों की संख्या से स्थापित हुआ यह संघ आज लाखों लोगों की आस्था का आस्थान बन गया। वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमण जी की अनुशासना में तेरापंथ प्रगति के नए-नए आयाम उद्घाटित कर रहा है। ये विचार 'शासनश्री' साध्वी मानकुमारी जी ने 265वें तेरापंथ स्थापना दिवस पर उपस्थित श्रावक समाज को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। तेरापंथ स्थापना दिवस पर प्रातः अनुशासन रैली निकाली गई जो जय घोषों के साथ मुख्य मार्गो से होते हुए तेरापंथ भवन पहुंची। रैली में ज्ञानशाला, कन्या मंडल, किशोर मंडल, महिला मंडल एवं सभा के सभी सदस्य गण अच्छी संख्या में शामिल हुए। इस अवसर पर साध्वी कुशलप्रज्ञा जी, साध्वी कीर्तिरेखा जी व साध्वी स्नेहप्रभा जी ने तेरापंथ व आचार्य भिक्षु के सिद्धांतों पर सारगर्भित विचार व्यक्त किए। साध्वी चैत्यप्रभा जी व महिला मंडल ने पृथक-पृथक सुमधुर गीत का संगान किया। आरती बैद व मीनाक्षी बुच्चा ने 'तेरापंथ के उद्भव का इतिहास' की रोचक प्रस्तुति दी। आभार ज्ञापन महिला मंडल की मंत्री रीना बैद ने किया। कार्यक्रम का शुभारंभ कन्या मंडल ने भिक्षु अष्टकम् से किया। कार्यक्रम का कुशल संयोजन साध्वी इन्दुयशाजी ने किया।

कांदिवली

साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञाजी के सान्निध्य में तेरापंथ स्थापना दिवस का आयोजन हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत अशोक हिरण के मंगलाचरण से हुई। इस अवसर पर साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा जी ने 265वें तेरापंथ स्थापना दिवस पर तेरापंथ के इतिहास का जीवंत चित्रण किया। साध्वी सुदर्शनप्रभा जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें तेरापंथ धर्म संघ मिला है। जो गुरु होते हैं वो अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाते हैं। साध्वी वृंद ने गीतिका 'शान हमारी तेरापंथ, जान हमारी तेरापंथ' की प्रस्तुति दी। पारस दुगड़, अणुव्रत समिति से दलपत बाबेल, तेयुप अध्यक्ष राकेश सिंघवी ने अपने विचार व्यक्त किए।

चित्तौड़गढ़

तेरापंथ भवन में आयोजित समारोह में मुनि संजय कुमारजी ने कहा आचार्य भिक्षु जन्म से ही प्रतिभा सम्पन्न थे, शास्त्रज्ञ थे, शास्त्रार्थ में अजेय थे। वे तेरापंथ संविधान के निर्माता थे। वर्तमान में साधु समाज को शिथिलता से बचाने में लक्ष्मण रेखा काम करती है। मुनि प्रसन्नकुमारजी ने कहा - आज के स्थापना दिवस का अर्थ सत्य मार्ग की स्थापना का दिन है। मुनिश्री ने कहा कि व्यक्ति की नजर तराजु के पलड़ों पर नहीं होकर तराजू के मध्य कांटे पर नजर रहती है। विश्वास का आधार कांटा है, गुरू का भी वही महत्व है। मुनि प्रकाशकुमारजी एवं मुनि धैर्य कुमारजी ने अपने विचार व्यक्त किए।

हिरियुर, कर्नाटक

साध्वी पावनप्रभाजी के सान्निध्य में तेरापंथ स्थापना दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम से पूर्व साध्वीश्री जी के मंगल पाठ श्रवण के पश्चात तेरापंथी सभा द्वारा अनुशासन रैली का आयोजन किया गया। रैली हिरियुर शहर के मुख्य रास्तों से होते हुए पुनः तेरापंथ भवन पहुंची, जिसमें ज्ञानशाला ज्ञानार्थियों के साथ सभा, तेयुप, महिला मंडल सम्पूर्ण तेरापंथ श्रावक समाज की सहभागिता रही। कार्यक्रम की शुरुआत ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों द्वारा मंगलाचरण से की गयी। साध्वी पावनप्रभाजी ने तेरापंथ स्थापना दिवस के अवसर पर अपने वक्तव्य में कहा- आचार्य भिक्षु एक महान साधक व सत्य के पुजारी थे। उनका नाम स्वयं एक मंत्र बन गया। हम सभी उनके सिद्धांतों को जानें व अमल करें। साध्वी आत्मयशाजी ने महामना भिक्षु के जीवन व तेरापंथ के इतिहास के बारे में वक्तव्य प्रस्तुत किया। साध्वी रम्यप्रभाजी ने कविता के माध्यम से क्रांतिकारी वीर भिक्षु के जीवन से सम्बंधित घटनाओं की प्रस्तुति दी।

वाशी

तेरापंथ महासभा के निर्देशन में 265वां तेरापंथ स्थापना दिवस कार्यक्रम तेरापंथ सभा वाशी द्वारा एवं अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में वाशी तेरापंथ युवक परिषद के अंतर्गत मंत्र दीक्षा का कार्यक्रम ज्ञानशाला परिवार द्वारा आयोजन किया गया। कार्यक्रम की बच्चों द्वारा मंगलाचरण से की गई। पधारे हुए सभी अतिथिगण का स्वागत मुख्य प्रशिक्षिका पिंकी कोठारी ने स्वागत वक्तव्य दिया। ज्ञानार्थियों द्वारा नमस्कार पर नाटक प्रस्तुति दी। ज्ञानार्थियों द्वारा मंत्र दीक्षा पर एक्शन सॉन्ग प्रस्तुत किया गया केन्द्रीय स्तर पर श्रेष्ठ प्रशिक्षिका का चयन होने पर श्रीमती संध्याजी कोठारी के सम्मान तेरापंथ समाज वाशी एवं ज्ञानशाला परिवार द्वारा किया गया शब्द चित्र द्वारा वाशी ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं प्रस्तुति रही। तेरापंथ सभा वाशी के अध्यक्ष पंकज चंडालिया मंत्री पवन परमार तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष अरविंद खटेड़ मंत्री निलेश कोठारी सामायिक परिवार से बसंतीलाल बाफना महिला मंडल की सहमंत्री विजेता भंसाली ज्ञानशाला परिवार परामर्शक अनीता सियाल नीतू परमार ने अपने विचार व्यक्त किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा निर्देशित मंत्र दीक्षा कार्यक्रम का देशभर में हुआ आयोजन

1. तेरापंथ युवक परिषद् संस्था भीलवाड़ा द्वारा साध्वी कीर्तिलता जी ठाणा-4 के सान्निध्य में मंत्र दीक्षा कार्यक्रम का आयोजन तेरापंथ भवन, नागौरी गार्डन में किया गया। कार्यक्रम में 22 बच्चों ने मंत्र दीक्षा ग्रहण की।
2. तेरापंथ युवक परिषद्, अमराईवाड़ी-ओढव द्वारा साध्वी काव्यलताजी के सान्निध्य में मंत्र दीक्षा का आयोजन किया गया।
3. मुनि रश्मिकुमारजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन इरोड में मंत्र दीक्षा का आयोजन किया गया।
4. साध्वी तिलकश्रीजी ठाणा-3 के सान्निध्य में तेरापंथ सभा भवन जीन्द में तेरापंथ युवक परिषद् ने मंत्र दीक्षा का सफल आयोजन किया।
5. डॉ. साध्वी गवेषणाश्रीजी के सान्निध्य में जैन तेरापंथ नगर, माधावरम्, चेन्नई में ने नौ वर्षीय बालक-बालिकाओं को मंत्र दीक्षा प्रदान की।
6. तेरापंथ युवक परिषद् नोहर द्वारा डॉ. मुनि अमृत कुमार जी ठाणा-2 के सान्निध्य में मंत्र दीक्षा कार्यशाला का आयोजन आचार्य तुलसी महाप्रज्ञ भवन में आयोजित हुआ। कार्यक्रम में 12 बच्चों ने मंत्र दीक्षा ग्रहण की।
7. तेरापंथ युवक परिषद् इचलकरंजी द्वारा 'शासनश्री' साध्वी कंचनप्रभाजी ठाणा -5 के सान्निध्य में मंत्र दीक्षा का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। कार्यक्रम में 23 बच्चों ने मंत्र दीक्षा ग्रहण की।
8. तेरापंथ युवक परिषद् पीलीबंगा द्वारा साध्वी सुदर्शनाश्री जी ठाणा - 5 के सान्निध्य में मंत्र दीक्षा कार्यशाला का आयोजन जैन भवन में किया। कार्यक्रम में पीलीबंगा और सूरतगढ़ परिषद् से लगभग 40 बच्चों की उपस्थिति रही।
9. साध्वी सिद्धप्रभा जी ठाणा - 4 के सान्निध्य में मंत्र दीक्षा कार्यक्रम तेयुप विजयनगर और तेयुप आरआर नगर ने संयुक्त रूप से अर्हम भवन में आयोजित की। साध्वी श्री सिद्ध प्रभा जी ने 9 वर्ष में प्रवेश कर रहे ज्ञानार्थी बच्चों को मंत्र दीक्षा का संकल्प करवाया।
10. तेरापंथ भवन, सरदारपुरा में साध्वी प्रमोदश्री जी के सान्निध्य में मंत्र दीक्षा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में 65 बच्चों की उपस्थिति रही।
11. मुनि दीपकुमारजी ठाणा-2 के सानिध्य में मंत्र दीक्षा कार्यक्रम का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद् कोयम्बतूर द्वारा किया गया।
12. तेयुप गंगाशहर के तत्वावधान में साध्वी चरितार्थप्रभाजी व साध्वी प्रांजलप्रभाजी के सान्निध्य में मंत्र दीक्षा का आयोजन शांतिनिकेतन सेवा केंद्र में किया गया।
13. साध्वी उदितयशाजी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा मंत्र दीक्षा का आयोजन किया गया। ज्ञानशाला के 400 बच्चों ने उत्साह से कार्यक्रम में भाग लिया। मंत्र दीक्षा लगभग 80 बच्चों को दी गयी।
14. सुशिष्या साध्वी शकुन्तला कुमारी जी के सान्निध्य में तेयुप विलेपार्ले द्वारा मंत्र दीक्षा का कार्यक्रम आयोजित किया गया।
15. मुनि जिनेशकुमारजी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद् साउथ हावड़ा के आयोजन में व वृहत्तर कलकत्ता तेरापंथ युवक परिषद् के सहयोग से प्रेक्षा विहार में भव्य मंत्र दीक्षा का आयोजन हुआ। इस अवसर पर साउथ हावड़ा के अतिरिक्त पूर्वांचल, लिलुआ, उत्तर हावड़ा, हिन्दमोटर, बाली-बेलूर, उत्तर कलकत्ता आदि ज्ञानशाला के 140 बच्चे उपस्थित थे उनमें से 31 बच्चों को मुनि श्री द्वारा मंत्र दीक्षा प्रदान करवाई गई।
16. मुनि सुमतिकुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में मंत्र दीक्षा कार्यशाला तेयुप पाली द्वारा आयोजित की गई जिसमें लगभग 150 बच्चे उपस्थित थे।
17. तेयुप लाडनूं द्वारा ऋषभ द्वार में मुनि रणजीतकुमार जी के सान्निध्य में मंत्र दीक्षा आयोजित की गई । मुनिश्री ने ज्ञानशाला के 10 ज्ञानार्थियों को मंत्र दीक्षा का संकल्प दिलाया।
18. तेरापंथ युवक परिषद् मण्डिया (कर्नाटक) द्वारा साध्वी संयमलता जी के सान्निध्य में मंत्र दीक्षा का आयोजन किया गया।
19. साध्वी पंकजश्रीजी ठाणा-4 के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद् वडोदरा द्वारा आयोजित मंत्र दीक्षा कार्यक्रम में 9 साल के बच्चों की मंत्र दीक्षा प्रदान कराई गई। कार्यक्रम में ज्ञानशाला के कुल 25 ज्ञानार्थी उपस्थित थे।
20. साध्वी पावनप्रभाजी के सान्निध्य में तेरापंथ युवक परिषद हिरियूर द्वार मंत्र दीक्षा का कार्यक्रम आयोजित किया गया।
21. तेरापंथ युवक परिषद् विक्रोली द्वारा मंत्र दीक्षा का कार्यक्रम उपासक मालचंद भंसाली एवं उपासक हस्तीमल डांगी के निर्देशन में आयोजित किया गया। 5 बच्चों ने मंत्र दीक्षा ग्रहण की।
22. तेयुप सैंथिया द्वारा ऋषभ भवन में मंत्र दीक्षा कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें 9 वर्ष के दो बच्चों को मंत्र दीक्षा दी गयी।
23. तेरापंथ युवक परिषद मदुरै के तत्वावधान में मंत्र दीक्षा का आयोजन किया गया जिसमें कुल 24 बच्चों ने भाग लिया। उपासक नेनमल कोठारी और उपासक धनराज लोढ़ा ने महामंत्र और अरिहंत देव के बारे में विस्तार से समझाया।
24. मुनि सुधाकर जी व मुनि नरेश कुमार जी के सान्निध्य में पटवा भवन में तेरापंथ युवक परिषद्, रायपुर द्वारा बालक-बालिकाओं के मंत्र दीक्षा का आयोजन किया गया, जिसमें 35 बालक-बालिकाओं ने भाग लिया।
25. तेरापंथ युवक परिषद, चित्तौड़गढ़ द्वारा मुनि संजय कुमार जी सान्निध्य में मंत्र दीक्षा का कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुनि प्रकाशकुमार जी ने ज्ञानशाला के बच्चों को नवकार मंत्र स्मरण का संकल्प कराया।
26. तेरापंथ युवक परिषद भुवनेश्वर ने मंत्र दीक्षा का आयोजन महासभा अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया, तेयुप अध्यक्ष रोशन पुगलिया एवं अन्य पदाधिकारियों की उपस्थिति में किया। तेयुप उपाध्यक्ष दिलीप मनोत ने 11 बच्चों को मंत्र दीक्षा का संकल्प करवाया।
27. समणी निर्देशिका कमलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में मंत्र दीक्षा कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन, कटक में हुआ। कार्यक्रम में लगभग 60 बच्चों की उपस्थिति रही जिनमें से 9 बच्चों को समणी जी द्वारा मंत्र दीक्षा प्रदान की गई।
28. तेरापंथ युवक परिषद् तिरुपुर द्वारा मंत्र दीक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत उपासिका संजू दुगड़ द्वारा बच्चों को मंत्र दीक्षा स्वीकार करवाई गयी।
29. तेरापंथ युवक परिषद कुर्ला द्वारा मंत्र दीक्षा का कार्यक्रम स्थानीय तेरापंथ भवन में कराया गया। उपासिका विद्या कोठारी ने 7 बच्चों को मंत्र दीक्षा ग्रहण करवाई।
30. तेरापंथ भवन तोशाम में मंत्र दीक्षा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुख्य प्रशिक्षिका कमलेश जैन ने बच्चों को मंत्र दीक्षा के महत्व को समझाते हुए पांच संकल्प करवाएं।
31. तेयुप कांदिवली द्वारा मंत्र दीक्षा कार्यक्रम डॉ. साध्वी मंगलप्रज्ञाजी के सान्निध्य में आयोजित हुआ।
32. अभातेयुप के तत्वावधान में तेयुप कांटाबांजी (ओडिशा) द्वारा मंत्र दीक्षा का आयोजन तेरापंथ भवन में विराजित समणी निर्देशिका जिनप्रज्ञाजी एवं समणी क्षांति प्रज्ञा जी के सानिध्य में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में लगभग 30 बच्चों को मंत्र दीक्षा प्रदान की गई।
33. तेयुप हैदराबाद द्वारा 'शासनश्री' साध्वी शिवमाला जी आदि ठाणा के सानिध्य में मंत्र दीक्षा का आयोजन किया गया।
34. राजलदेसर में 'शासनश्री' साध्वी मानकुमारी जी के सान्निध्य में ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों को मंत्र दीक्षा प्रदान की गई।
35. आषाढ़ी पूर्णिमा के शुभ अवसर पर साध्वी लब्धिप्रभा जी ठाणा-3 के सान्निध्य में तेरापंथ भवन पश्चिम विहार में छोटे बच्चों को मंत्र दीक्षा प्रदान की गई।

उपासक प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन

चेन्नई।

आचार्य श्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि हिमांशुकुमारजी के सान्निध्य में उपासक प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, चेन्नई के तत्वावधान में तेरापंथ सभा भवन, साहूकारपेट में हुआ।

उपस्थित उपासक परिवार के साथ धर्मपरिषद् को लक्षित करते हुए मुनिश्री ने कहा कि सामान्य, मध्यम और उत्तम इन तीन श्रेणियों के श्रावकों में उपासक उत्तम श्रेणी के श्रावकों की कोटि में आते हैं। उपासक स्वयं साधना, आराधना करके दूसरों की साधना में योगभूत बनते हैं। वे धर्मसंघ की उपासना, प्रभावना को प्रवर्धनमान करते हैं। मुनिप्रवर ने उपासकों को छः 'वी' के सिद्धांत दिये- विनय भाव, वैराग्य भाव, व्यवहार कौशल, वक्तव्य शैली, वाणी संयम और विवेक सम्पन्नता।

मुनि श्री ने कहा कि जिस व्यक्ति के हृदय में नवकार का वास है, वह सदैव सफल होता है। नमस्कार महामंत्र का विधि सहित, श्रद्धा के साथ साधना करने से साधक के जीवन का कायाकल्प होता है। नवीन ऊर्जा का संचार होता है। जन्मों-जन्मों से बंधे कर्मों का क्षय होता है। पाप कर्म टूटते हैं। मुनि हेमंतकुमारजी ने कहा कि उपासक परिवार में आपस में सौहार्द, सामंजस्य होना चाहिए। आपकी विषय प्रस्तुति में परम्परा, व्यक्तिगत, व्यवहारिकता और आधुनिकता के बिन्दुओं का समावेश होना चाहिए। उपासकों के जीवन का परिवर्तन श्रोताओं के परिवर्तन में योगभूत बनता है। अभिव्यक्ति में नयेपन के साथ उपयोगिता की प्रधानता हो और सकारात्मकता के साथ जिज्ञासुओं की जिज्ञासाओं का समाधान करें।

'मेडिटेशन- ए स्टेप टूवर्ड हेल्दी सोल' कार्यशाला का आयोजन

गंगाशहर। कैंसर जागरूकता अभियान के अन्तर्गत तेरापंथ महिला मण्डल एवं तेरापंथ युवक परिषद् गंगाशहर द्वारा संयुक्त रुप से 'मेडिटेशन-ए स्टेप टूवर्ड हेल्दी सोल' कार्यशाला का आयोजन साध्वी चरितार्थप्रभाजी एवं साध्वी प्रांजलप्रभाजी के सान्निध्य में शांति निकेतन में किया गया। साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के साथ कार्यशाला प्रारम्भ हुई। महिला मण्डल अध्यक्ष संजु लालाणी ने सभी का स्वागत किया। कार्यशाला के मुख्य वक्ता डॉ. पंकज टांटिया ने रोचक तरीके से फिट युवा हिट युवा और कैंसर जागरुकता से सम्बंधित अपने जीवन्त अनुभवों से लोगों को प्रेरित किया। इस अवसर पर श्रावक- श्राविकाओं ने अपनी जिज्ञासाओं का समाधान भी प्राप्त किया। साध्वी चरितार्थप्रभाजी ने प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करवाए और स्वस्थ जीवन जीने की लिए निरंतर इनका अभ्यास करने की प्रेरणा दी। अभातेयुप फिट युवा हिट युवा के राज्य प्रभारी व तेयुप गंगाशहर उपाध्यक्ष ललित राखेचा ने फिट युवा हिट युवा आयाम एवं '60साल बेमिसाल' की जानकारी देते हुए आभार ज्ञापन किया। कार्यशाला का संचालन संतोष बोथरा द्वारा किया गया।

पृष्ठ एक का शेष

स्वयं अभय रहते हुए...

अभय में तारतम्य हो सकता है। अर्हत् तो पूर्णतया अभय होते हैं, अभय दाता होते हैं। दुनिया में वह आदमी बड़ा सुखी होता है जिसने भय को जीत लिया। वह परम सुखी हो सकता है। जो दूसरों को डराता है वह पाप कर्म - असात वेदनीय का बंध कर सकता है। हम किसी को डराने का, दुःखित करने का प्रयास न करें। मनुष्य अपने आप में मनोबल, समता और शांति का भाव रखे, चाहे उसके जीवन में कितनी भी विषम परिस्थितियां आ जाएं। आगम में कहा गया है कि दस दानों में अभय दान सर्वश्रेष्ठ दान है, उत्कृष्ट दान है।

भय को दो प्रकारों में विभक्त किया जा सकता है प्रशस्त व अप्रशस्त, सात्विक व असात्विक। हम प्रशस्त अभय की परिपालना करें। जिस तरह सब अस्तिकाय हमारे सहयोगी होते हैं और जीव भी एक दूसरे का सहयोग करते हैं उसी तरह मनुष्य ना किसी से डरे और ना किसी को डराए, सब मिलजुल कर रहें। जहां पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक समूह हैं, वहां एक-दूसरे को सेवा देते हैं। सेवाकेन्द्रों में चाकरी सेवा दी जाती है। निश्चय नय का विचार है- मैं अकेला हूं, अकेला आया हूं। मेरे हर कर्म मुझे अकेले को ही भोगने पड़ते हैं। व्यवहार में दूसरे की सहायता-सेवा कर सकते हैं। हम दूसरों को भयभीत न करें। छोटे प्राणियों के प्रति हमारा अहिंसा का भाव रहे। जैसे को तैसा वाली नीति न हो, ईंट का जवाब कोमल फूलों से दें। भला करे या न करें पर किसी का बुरा न करें। पूज्यवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाये। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने फरमाया कि जीवन के दो चरम छोर हैं- लघुता और प्रभुता। आत्मा की प्रभुता को प्राप्त कर व्यक्ति अपनी आत्मिक शक्ति को जगाने का प्रयास करता है। दस धर्मों में एक धर्म है- लाघव धर्म। लघुता यानी हल्कापन। लघुता से प्रभुता मिले, प्रभुता से प्रभु दूर। लघुता के बिना हम मोक्ष को प्राप्त नहीं कर सकते। 'बेटी तेरापंथ की' के सम्मेलन के संदर्भ में मुनि कुमारश्रमणजी एवं मुनि विश्रुतकुमारजी ने अपनी अभिव्यक्ति दी। कन्या मंडल व किशोर मंडल ने चौबीसी के गीत की प्रस्तुति दी। कच्छ-भुज की बेटियों ने गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

अनावश्यक हिंसा से...

साध्वीवर्या संबुद्धयशाजी ने कहा कि नमस्कार महामंत्र को यूनिवर्सल मंत्र के रूप में पहचाना जाता है क्योंकि इसमें नाम और रूप नहीं गुणों की पूजा की गई है। व्यक्ति विशेष का नाम नहीं है। इसी प्रकार चतुर्विंशति स्तव के प्रथम पद में गुणों की व्याख्या की गई है। महासभा के तत्वावधान में 'बेटी तेरापंथ की' के दूसरे सम्मेलन का आयोजन परम पावन आचार्य प्रवर की पावन सन्निधि में हुआ। सम्मेलन की संयोजिका कुमुद कच्छारा ने इसकी विस्तृत जानकारी दी। बेटियों ने अपनी प्रस्तुति दी। आचार्य प्रवर ने पावन प्रेरणा देते हुए फरमाया कि साधु सांसारिक सहयोग से मुक्त होता है, उसमें त्याग व संयम की प्रधानता होती है। गृहस्थ जीवन में तो परिवार के कार्यक्रमों में आना-जाना होता है, साधु जीवन संबंधातीत है। बेटियां अपने परिवार में अच्छे से रहे। परिवार में, बच्चों में, धार्मिक संस्कारों का सिंचन करें। परिवार नशा मुक्त रहे, दामाद लोग भी शांति से रहें, बच्चों को ज्ञानशाला के माध्यम से शिक्षित करें। महासभा का यह कम धार्मिक व सामाजिक दृष्टि से निष्पत्ति कारक बने। पूज्यवर की सन्निधि में होने जा रहे त्रि-दिवसीय उपासक सेमिनार का शुभारंभ पूज्यवर के मंगलपाठ से हुआ। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

परिवार हमारी जिन्दगी की खुशहाली का मंदार है

पीतमपुरा।

साध्वी अणिमाश्री जी के सान्निध्य में खिलौनी देवी धर्मशाला में परिवार प्रशिक्षण कार्यशाला 'एमबीबीएस' का आयोजन हुआ। साध्वीश्री ने पारिवारिक खुशहाली के टिप्स देते हुए कहा परिवार हमारे जीवन का आधार और शृंगार है। परिवार हमारी खुशहाली का मंदार है, परिवार प्रभु द्वारा प्रदत्त उपहार है। परिवार ब्रह्माण्ड के सामान है, जिस प्रकार व्र ब्रह्माण्ड में नौ ग्रह होते हैं उसी प्रकार परिवार में कुछ सदस्य सूर्य की तरह तेजस्वी, कुछ चन्द्रमा की तरह शीतल तो कुछ सदस्य शान्त राहु-केतु की तरह होते हैं। साध्वीश्री ने कहा आज इस कार्यशाला में पति-पत्नी बच्चे सभी आए हैं। कहते हैं पति समझदार हो तो मकान जल्दी बनता है, पत्नी समझदार हो तो मकान घर बनता है। बच्चे समझदार हों तो घर मंदिर बन जाता है अगर तीनों समझदार हों तो घर स्वर्ग सा सुंदर बन जाता है। घर को स्वर्ग सा सुंदर बनाने के लिए अपेक्षा है परिवार में सदस्य मधुरभाषी बनें। मधुर भाषा परिवार को सुखी व समृद्ध बनाने का सबसे बड़ा टॉनिक है।

डॉ. साध्वी सुधाप्रभा जी ने कहा जिस परिवार रूपी मंदिर में संस्कारों के दीप जलते हैं, वह परिवार खुशहाली के आलोक से हमेशा आलोकित रहता है। जिस परिवार के संस्कार सम्मुनत होते हैं, वह परिवार बुलंदियों का स्पर्श करता है।

साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने कुशल मंच संचालन करते हुए कहा परिवार कि खुशहाली के लिए फोर टी की अपेक्षा है- ट्रस्ट, टाईम, टोक, टोलरेन्स।

साध्वी कर्णिकाश्रीजी ने वक्तव्य एवं साध्वी समत्वयशाजी ने 'परिवार ऐसा बनाएं' गीत का सुमधुर संगान किया। इस अवसर पर सूर्यकान्ता बैद एवं पूजा जैन की तप अनुमोदना में पारिवारिक जन ने गीत की प्रस्तुति दी।

श्रेष्ठ किशोर मंडल से सम्मानित

विजयनगर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा सूरत में आयोजित 19वें त्रिदिवसीय राष्ट्रीय अधिवेशन में तेरापंथ किशोर मंडल विजयनगर को सेवा, संस्कार एवं संगठन के क्षेत्र में 'श्रेष्ठ किशोर मंडल' का स्थान प्राप्त हुआ। इस उपलक्ष में तेरापंथ सभा भवन विजयनगर में किशोर मंडल की प्रस्तुति के लिए आयोजित कार्यक्रम में साध्वी सिद्धप्रभा जी ने कहा कि तेरापंथ युवक परिषद् विजयनगर के मार्गदर्शन में आध्यात्मिक कार्यों के साथ-साथ रचनात्मक कार्यों में भागीदारी से किशोरों का अच्छा विकास हो रहा है। अभिभावकों को अपने बच्चों को किशोर मंडल से जोड़ना चाहिए।

राष्ट्रीय प्रभारी अरविंद पोखरणा ने टीकेएम विजयनगर को सर्वश्रेष्ठ बनने का आह्वान किया। अधिवेशन में किशोर मंडल पर प्राप्त विशेष कृपा के लिए गुरुदेव आचार्य श्री महाश्रमण जी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की।

किशोरमंडल द्वारा प्लास्टिक मुक्त जीवन शैली के प्रचार प्रसार हेतु सूरत अधिवेशन में अभिनव स्टॉल स्थापित की गई। इस स्टॉल में 900 से ज्यादा किशोरों को प्लास्टिक से उत्पन्न पर्यावरण के खतरों को प्रस्तुत करते हुए प्लास्टिक के विकल्पों के बारे में बताया गया एवं प्रतीकात्मक रूप में लकड़ी की टूथ ब्रश का वितरण भी किया गया।

अभातेयुप अध्यक्ष रमेश डागा, उपाध्यक्ष प्रथम पवन मांडोत, अभातेयुप प्रबंध मंडल सदस्य, किशोर मंडल राष्ट्रीय प्रभारी अरविंद पोखरणा आदि ने स्टॉल का अवलोकन किया।

टीकेएम विजयनगर के नवाचार और जागरूकता की सबने सराहना की। साथ ही इस अधिवेशन में तेरापंथ किशोर मंडल विजयनगर को 'बेस्ट कांसेप्ट ऑफ स्टॉल' के लिए भी सम्मानित किया गया। तेरापंथ किशोर मंडल 14 सदस्यों का दल तेयुप विजयनगर संगठन मंत्री पंकज कोचर के साथ गुरु चरणों में सूरत अधिवेशन में शामिल हुआ टीकेएम विजयनगर के प्रभारी अमित दक, वर्तमान संयोजक हर्ष मांडोत, सह संयोजक दर्शन बाबेल, रिशित छाजेड़, चेतन गांधी, अधिवेशन संयोजक नमन चावत, सह संयोजक रिदम चावत एवं

सभी किशोरों ने श्रम का नियोजन किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मंत्री संजय भटेवरा ने किया।

मर्यादा और अनुशासन तेरापंथ धर्म संघ की है पहचान

अणुव्रत भवन, नई दिल्ली।

साध्वी कुन्दनरेखाजी के सान्निध्य में एवं तेरापंथ सभा दिल्ली के तत्वावधान में आचार्य भिक्षु जन्मदिवस एवं बोधि दिवस को त्याग, तप एवं जप के साथ हर्षोल्लास से मनाया गया। इस अवसर पर साध्वी कुन्दनरेखाजी ने कहा- आचार्य भिक्षु एक विलक्षण महापुरुष थे, जो अपनी प्रयुत्पन्न मेधा से बचपन से ताउम्र अध्यात्म की तरफदारी करते रहे। कालजयी व्यक्तित्व के धनी आचार्य भिक्षु का जीवन कष्टों की कहानी बनकर उभरा फिर भी वे न तो कभी घबराये, ना भयभीत हुए बल्कि निर्भय बनकर अविरल गति से बढ़ते रहे। छोटी सी पगडंडी पर चले और उसे राजपथ बना दिया।

साध्वी सौभाग्ययशाजी ने कहा- आचार्य भिक्षु का जीवनवृत प्रेरणा की मिशाल है। उन्होंने पांच वर्षों तक कठिनाइयों का पहाड़ पार कर अध्यात्म के पथ को प्रशस्त किया। तेरह नियमों से सुसज्जित यह शासन हर साधक के लिए त्राण, गति और प्रतिष्ठा है। साध्वी कल्याणयशा जी ने कहा - आचार्य भिक्षु ने मर्यादा और अनुशासन से तेरापंथ धर्म संघ की नींव रखी थी। आज यह वट वृक्ष बन मानवता एवं नैतिक मूल्यों को प्रतिष्ठित करने हेतु अग्रिम भूमिका निभा रहा है।

चातुर्मासिक चतुर्दशी के अवसर पर साध्वी कुन्दनरेखाजी ने तेरापंथ धर्म संघ की मर्यादा और अनुशासन पर विशेष प्रकाश डालते हुए कहा अनुशासन धर्म संघ के लिए साधना के अलग-अलग मार्ग प्रशस्त करता हुआ साधक को बाह्य विषमताओं से बचाता है। मर्यादा का महादीप प्रकाश स्तम्भ की तरह हर साधक के मार्ग को प्रकाशवान बनाता है। इस अवसर पर साध्वीश्री द्वारा हाजरी का वाचन किया गया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन अजातशत्रु मांगीलाल सेठिया ने किया।

साध्वी सौभाग्ययशाजी ने कहा- चातुर्मास का समय अन्तः चेतना के निखार का समय है। सामायिक, संवर, तप, जप आदि अनुष्ठानों से निरन्तर आत्मा से जुड़े रहें ताकि सम्यग् दर्शन पुष्ट हो सके। साध्वी कल्याणयशाजी ने सुमधुर गीत का संगान किया।

आषाढ़ी पूनम के अवसर पर साध्वी कुन्दनरेखाजी ने कहा- सायं सात बजकर पच्चीस मिनिट का अनमोल अद्भुत समय, अर्हतों की साक्षी से आचार्य भिक्षु ने अपने शिष्यों सहित पुराने जीवन का व्युत्सर्ग कर नये जीवन में प्रवेश किया और तेरापंथ स्थापना का यह पुनीत अवसर हमें मिला। तब से अब तक उत्तरवर्ती परम्परा के सभी आचार्यो ने इसका संरक्षण किया। साध्वीश्री जी ने कहा तेरापंथ की कुंडली के योग इतने सुन्दर और विशिष्ट हैं कि यह धर्मसंघ पंचम आरे के अंतिम समय तक अपना आध्यात्मिक परचम फहराता रहेगा। साध्वी सौभाग्ययशा जी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। तेरापंथ स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में मांगीलाल सेठिया, अभातेममं की कार्यकारिणी सदस्या प्रीति भंसाली, सुरेश जैन ने अपनी भावान्जलि आचार्य भिक्षु के श्रीचरणों में वक्तव्य एवं गीत के द्वारा समर्पित की।

मन पर अनुशासन के बिना असंभव होता है तप

कांदिवली, मुंबई।

तेरापंथ भवन कांदीवली में सतरंगी तप अनुष्ठान में संभागी तपस्वियों को संबोधित करते हुए साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञाजी ने कहा कि तपस्या आत्म शुद्धि और निर्जरा में प्रवर सहायक होती है। अगर मनोबल ऊंचा है तो तप में विशेष बाधा नहीं आती।

सतरंगी तपस्या की साधना में श्रावक समाज ने उत्साह से भाग लिया। आज सानन्द तप सफलता पर हम तपस्वियों के तप की अनुमोदना करते हैं। मन पर अनुशासन के बिना तप असंभव होता है।

भाई-बहनों ने सतरंगी तप की आराधना कर प्रबल मनोबल का परिचय दिया है। हम यह कामना करते हैं कि आगे भी तप के पथ पर निरन्तर गति शील रहें। साध्वीश्री ने अपने प्रवचन के मध्य तपस्वी कुंदनमल जी स्वामी के ऐतिहासिक जीवनवृत पर प्रकाश डाला।

कांदीवली महिला मंडल द्वारा सुमधुर संगान से तपस्वियों का वर्धापन किया गया। तेयुप मलाड के अध्यक्ष जयन्ती मादरेचा, मंत्री पंकज कच्छारा ने मंगल भाव प्रस्तुत किए। साध्वी सुदर्शनप्रभाजी, साध्वी राजुलप्रभाजी, साध्वी चैतन्यप्रभाजी ने समूह स्वर द्वारा तप अनुमोदना की।

बैंगलोर से समागत जितेन्द्र कोठारी ने अपने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर अठाई तप करने वाले साधकों का साहित्य द्वारा सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संयोजन साध्वी राजुलप्रभाजी ने किया।

आयंबिल मासखमण तप अभिनंदन समारोह का आयोजन

साउथ हावड़ा।

मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा- 3 के सान्निध्य में खुशबु दुगड़ के 31 दिन के आयंबिल तप के उपलक्ष्य में तप अभिनंदन कार्यक्रम का आयोजन प्रेक्षा विहार में साउथ हावड़ा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा द्वारा किया गया।

इस अवसर पर उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनिश्री ने कहा - जिस प्रकार शरीर पर तेल की मालिश करने से शरीर के अंग स्वस्थ रहते हैं, उसी प्रकार तप से मन की मालिश होने से मन स्वस्थ रहता है। तप से तेज बढ़ता है, आभामंडल विशुद्ध होता है।

तपस्या के अनेक प्रकार हैं- उपवास भी तपस्या है, आयंबिल भी तपस्या है, ऊनोदरी भी तपस्या है। आयंबिल स्वाद विजय की साधना है। आयंबिल एक प्रकार की चिकित्सा है।

साध्वी मीरांजी ने 13 महीने की आयंबिल तप की साधना कर तेरापंथ धर्म संघ में एक कीर्तिमान स्थापित किया था। आयंबिल का अर्थ है- एक धान पानी उपरांत त्याग करते हुए एक बार से अधिक भोजन नहीं करना, वह भी नमक रहित।

बहिन खुशबु दुगड़ ने आयंबिल का मासखमण करके साहस का परिचय दिया है। तप अभिनंदन पत्र का वाचन मुख्य न्यासी संजय नाहटा ने किया। आभार सभा मंत्री बसंत पटावरी व संचालन मुनि परमानंदजी ने किया।

बोलती किताब

मैं कौन हूँ ?

जिज्ञासा स्वयं की :- मैं कौन हूं? इस प्रश्न के उत्तर में कुछ लोग कहते हैं— आदमी सात धातुओं का पुतला है। कोई कहते हैं— पांच तत्त्वों का पुतला है। जो दिखाई देता है, उसके बारे में अनेक धारणाएं हैं। मैं कौन हूं? इस प्रश्न पर जितनी ज्यादा गंभीरता से चिंतन किया जाएगा, उतनी ही सचाई सामने आएगी। मैं कहां से आया हूं और कहां जाऊंगा? यह प्रश्न भी सबके मन में उठना चाहिए।

अर्थ साधन है साध्य नहीं:- जिस समाज में, जिस राष्ट्र में धन साध्य बनता है, वह समाज, वह राष्ट्र नीचे की ओर जाता है और कुछ समय बाद अपनी सभ्यता और संस्कृति को पूरी तरह से समाप्त कर देता है। जरूरी है कि धन को सिर्फ साधन माना जाए, उसे साध्य मानने की भूल न की जाए।

निर्माण करें स्थायी घर का:- अशाश्वत घर और बंगले की तो हम बहुत चिंता करते हैं। उसके मेंटिनेंस के प्रति हमेशा सजग रहते हैं। उसे तरह-तरह की सामग्री से सजाते हैं, डेकोरेटेड करते हैं, चमकाते रहते हैं, लेकिन अपनी आत्मा को मांजने और चमकाने में हमारी रुचि क्यों नहीं है? यह बहुत जरूरी सवाल है, जिसे हर आदमी को स्वयं करना चाहिए ।

जिज्ञासा सत्य की :-जानने की इच्छा प्रबल हो तो ज्ञान का विकास होता है। जिज्ञासा भी किसी सामान्य व्यक्ति के मन में नहीं उठती । सत्य को जानने की जिसमें प्रबल इच्छा हो, वही जिज्ञासा करेगा। ज्ञान की इतनी पिपासा हो कि उसे जाने बिना चैन न आए। सबसे पहले अपने बारे में जिज्ञासा होनी चाहिए कि मैं कौन हूं?

सूक्ष्म जगत: शरीर में अशरीर और रूप में अरूप को देखने का अभ्यास करें। इस अभ्यास के द्वारा जब हमारी अंतर्दृष्टि जागृत होगी। तब स्थूल जगत से हट कर हम सूक्ष्म जगत में जीने के अभ्यस्त बनेंगे। सूक्ष्म जगत की अपनी विशेषताएं हैं। जब तक व्यक्ति स्थूल जगत में जीता है, उसका ज्ञान बहुत सीमित होता है। समझ भी पर्याप्त विकसित नहीं होती, वैसी स्थिति में वह अपना बहुत ज्यादा विकास नहीं कर सकता।

समय का प्रबंधन करें - किसी को नियमित होना है तो घड़ी के साथ चलने की आदत डालनी होगी। घड़ी समय के साथ चलती है। वह समय की अच्छी साथी है। इसीलिए मैंने अपने जन्मदिन के दिन कहा था कि मैं घड़ी के साथ चलता हूं। मैंने अपने समय का निर्धारण कर रखा है और आप लोगों को भी समय की कीमत को आंकते हुए उसका निर्धारण करना चाहिए। उसमें कुछ समय अपने शरीर के लिए, कुछ समय मन के लिए दें, कुछ समय आत्मचिंतन और परमार्थ चिंतन में लगाएं।

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

कैंसर कार्यशाला का आयोजन

सुजानगढ़। अभातेममं द्वारा निर्देशित कैंसर कार्यशाला का आयोजन 'शासनश्री' साध्वी सुप्रभाजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र द्वारा हुआ। महिला मंडल अध्यक्षा राजकुमारी भूतोड़िया ने पधारे हुए सभी अतिथियों का स्वागत किया। कन्या मंडल संयोजिका युक्ता भूतोड़िया ने कैंसर से बचाव में योग की भूमिका पर अपने विचार व्यक्त किए। योगा ट्रेनर उमा सेन एवं श्रद्धा सेन ने प्रयोग करवाते हुए कहा कि योग करने से शरीर में स्फूर्ति आती है। कपाल भाति, अनुलोम-विलोम प्राणायाम करने से काफी बीमारियों से दूर रह सकते हैं। साध्वी मनीषाश्रीजी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। उमा सेन एवं श्रद्धा सेन का सम्मान किया गया। आभार ज्ञापन महिला मंडल मंत्री डॉ. पूजा फूलफगर ने किया। कुशल संयोजन सुमन चौरडिया ने किया।

❖ दुनिया में चार चीजें दुर्लभ मानी गई हैं– मनुष्यता, धर्मश्रवण, श्रद्धा और संयम में पराक्रम।
– आचार्य श्री महाश्रमण

अनावश्यक हिंसा से बचने का हो प्रयास : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।
30 जुलाई, 2024

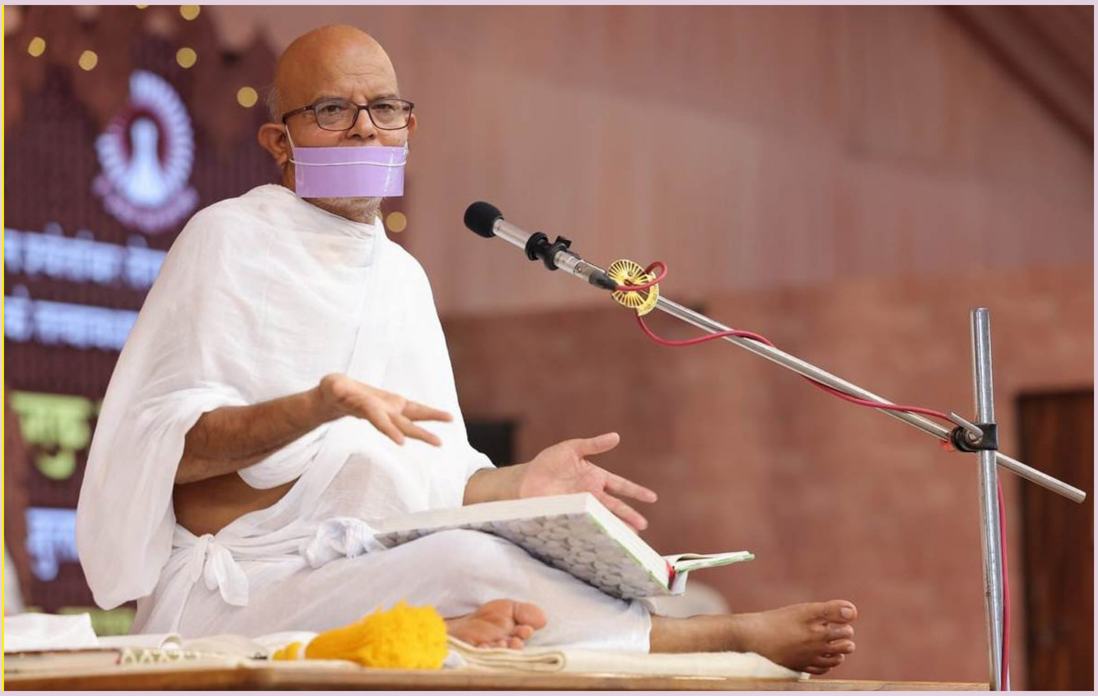

अध्यात्म साधना के सुमेरू आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आर्हत् वाणी का रसपान कराते हुए फरमाया कि आयारो आगम के प्रथम अध्ययन में कहा गया है- आदमी हिंसा में प्रवृत्त हो छः जीव निकायों की हिंसा में चला जाता है। विभिन्न प्रसंगों में जीव की हिंसा हो सकती है। कभी मनोरंजन के लिए भी जीवों को कष्ट पहुंचाया जाता है।

आदमी शस्त्र छोड़े और अशस्त्र की दिशा में आगे बढ़ने का प्रयास करे। जो हिंसा जरूरी न हो, उससे बचने का प्रयास करना चाहिए। आवश्यक हिंसा तो करनी पड़ सकती है। साधुओं के द्वारा प्रतिबोध मिलता है, तो कितने लोग हिंसा को छोड़ अहिंसा के मार्ग पर बढ़ सकते हैं।

हिंसा दो प्रकार की होती है- द्रव्य हिंसा और भाव हिंसा। द्रव्य हिंसा में साधु के पाप-कर्म का बन्ध नहीं होता है। सामान्य आदमी जीव हिंसा से बचने का प्रयास करे। आसक्ति से भी व्यक्ति हिंसा में चला जाता है। लोभ के कारण, आक्रोश के कारण भी आदमी हिंसा में जा सकता है। भावों से आतुर बने लोग प्राणियों को कष्ट में डाल देते हैं।

चतुर्मास के समय में कितने लोग खाद्य संयम, तपस्या करते हैं। साधु का जीवन तो अहिंसामय होना ही चाहिए। गृहस्थ भी कहीं रहे यह चिन्तन रहे कि मैं हिंसा से बचकर रह सकूं। आदमी के कषाय मंद पड़े, ऐसा प्रयास हो। आदमी के जीवन में ज्यादा से ज्यादा अहिंसा रहे, यह काम्य है।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने फरमाया कि हमारा लक्ष्य है वीतराग बनना, अर्हत् की स्थिति को प्राप्त करना। इसके लिए हमें चित्त को निर्मल बनाना होगा, साधना करनी होगी। भीतर के मल को दूर करने के लिए ध्यान का अभ्यास करना होगा। इससे व्यक्ति राग-द्वेष से मुक्ति की ओर आगे बढ़ सकता है। प्रेक्षाध्यान करने वाले का दृष्टिकोण साफ हो जाता है कि मुझे मेरे मन को साफ करना है। ध्यान के अभ्यास से एकाग्रता बढ़ जाती है। चंचल मन साधना में अवरोधक बनता है। स्थिर मन से साधक ध्यान में प्रवेश कर लेता है। साध्वीवर्या संबुद्धयशाजी ने कहा कि पारस मणि से लोह पिंड सोना बन जाता है। ज्ञानी-विद्वत जनों ने सम्यक्त्व को पारस मणि बताया है। इससे आदमी की चमक बढ़ जाती है, आत्मा ज्ञान को प्राप्त करने लग जाती है। सम्यक्त्व निरंतर टिका रहे इसके लिए चतुर्विंशति स्तव की स्तुति करनी चाहिये। चतुर्विंशिति स्तव की स्तुति से दर्शन की विशुद्धि होती है। श्रद्धा सही और मजबूत हो जाती है। वीतराग बनने की प्रेरणा जागृत हो जाती है, पर इसके लिए जरूरी है कि शब्द के साथ उसका अर्थ का ज्ञान जरूरी है।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

हिंसा नरक का द्वार, श्रवण से ज्ञान प्राप्त कर बनें अहिंसक : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।
31 जुलाई, 2024

अहिंसा का संबोध प्रदान करने वाला युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने अमृत देशना देते हुए फरमाया कि आदमी को सुनने से संबोधि प्राप्त हो सकती है। प्राचीन काल में हो सकता है कि ज्ञान का एक बड़ा माध्यम सुनना था पर आज की स्थिति में बदलाव आया है। प्राचीन काल में सुनने के लिए किसी के समक्ष उपस्थित रहकर सुनना पड़ता था, परंतु आज तो हजारों कोस दूर बैठे भी तत्काल प्रवचन सुना जा सकता है। इसके अलावा आज के युग में इतना साहित्य उपलब्ध है कि पढ़कर भी ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

आयारो आगम में कहा गया है कि तीर्थंकर के पास कोई सुन ले या अनगार साधुओं के पास कोई उनकी कल्याणी वाणी सुनले तो हिंसा के बारे में जानकारी प्राप्त हो सकती है। प्रवचन को सुनने अथवा बातचीत के माध्यम से ज्ञान अर्जन हो सकता है। बातचीत के माध्यम से जिज्ञासाओं का समाधान कर व्यक्ति को श्रद्धालु बनाया जा सकता है। एक वक्ता की वाणी, जो कल्याणी हो, उससे कितनों को ज्ञान मिल सकता है। हिंसा का परिणाम खराब आने वाला है, आदमी जब यह जान जाता है तो उसके के मन में यह भाव जाग सकता है कि मुझे ऐसा कोई कार्य नहीं करना चाहिए जिससे हिंसा हो।

आयारो आगम में हिंसा के दुष्परिणाम बताए गए हैं। हिंसा चित्त को व्यथित करने वाली है, हिंसा करने वाला अपनी आत्मा को बंधन में डाल सकता है। कर्मबंधन से उसका परिणाम भोगना पड़ता है। मोहनीय कर्म के उदय के बिना आदमी हिंसा नहीं कर सकता। मोहनीय कर्म के उदय से ही आदमी हिंसा में प्रवृत्त होता है। हिंसा के होने में अतीत के मोहनीय कर्म का बंध, वर्तमान में हिंसा होना और फिर पुनः भविष्य के लिए कर्म बंध कर लेता है। हिंसा तो मानो मृत्यु ही है, नरक के समान है।

हिंसा नरक का द्वार है, यह जानकारी या इस प्रकार की जानकारी साधु अथवा अर्हत की वाणी से प्राप्त होती है तो आदमी यह सोच सकता है कि मैं हिंसा से अपना बचाव करूं। इस प्रकार तीर्थंकरों अथवा साधु की वाणी से कितनों को संबोध मिल सकता है।

आयारो आगम के पावन प्रवचन के पश्चात युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने उपस्थित श्रावक समाज को पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी द्वारा रचित 'चंदन की चुटकी भली' पुस्तक में वर्णित चक्रवर्ती सनत्कुमार के आख्यान को समाप्त किया।

मंगल प्रवचन के पश्चात प्रेक्षाध्यान की संस्थाओं के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि कुमारश्रमण जी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। प्रेक्षा इंटरनेशनल के अध्यक्ष अरविंद संचेती, अध्यात्म साधना केंद्र से के. सी. जैन, प्रेक्षा फाउंडेशन चेयरमैन अशोक चिंडालिया, भेरूलाल चोपड़ा ने अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

हिंसा के तीन कारण अभाव, आवेश और अज्ञान : आचार्यश्री महाश्रमण

सूरत।
29 जुलाई, 2024

अध्यात्म चेतना के युगपुरुष आचार्यश्री महाश्रमणजी ने आगम वाणी का रसास्वाद कराते हुए फरमाया कि आयारो आगम के प्रथम अध्ययन में कहा गया है- आदमी अपराध में चला जाता है, हिंसा में प्रवृत्त हो जाता है। हिंसा दो प्रकार की होती है- आरम्भजा और संकल्पजा। जीवन चलाने के लिए जो हिंसा की जाती है, वह आवश्यक कार्य है, उससे आदमी का बच पाना मुश्किल है, यह आरम्भजा हिंसा हो जाती है।

साधु की अहिंसा तो उच्चकोटि की, महाव्रत की अहिंसा होती है। साधु के शरीर से कुछ-कुछ हिंसा हो सकती है, पर साधु मन-वचन से हिंसा नहीं करता है। पर वह हिंसा उसके लिए मान्य है। यह आवश्यक कोटि की हिंसा हो जाती है।

संकल्पजा हिंसा में प्रवृत्त होने वाला आर्त्त, दुःखी आदमी है, तभी वह हिंसा में जाता है। पदार्थ पास में नहीं है, भूखमरी, गरीबी है, अभावग्रस्त है, तब वह हिंसा में जा सकता है। अभाव हिंसा का निमित्त बन सकता है। अनाथ आश्रम में जो बच्चे रखे जाते हैं, उसका मूल उद्देश्य यही है कि अभावग्रस्त ये बच्चे हिंसा में न चले जाएं। आवेश-कषाय के कारण भी व्यक्ति हिंसा में प्रवृत्त हो जाता है।

तीसरा कारण बताया है कि ऐसे लोग हैं जिनको समझाना मुश्किल है, वे अहिंसा धर्म से अनजान है, वे अज्ञानी हैं। अज्ञान के कारण व्यक्ति हिंसा और अपराध में जा सकता है। कोई भी अपराध या भूल का एक कारण अज्ञान होता है। श्रावक संदेशिका का उद्देश्य यही है कि श्रावकों को नियमों की जानकारी हो, हमारी विधि की जानकारी हो ताकि श्रावक भूल नहीं करें। व्यवस्था को अच्छा रखने के लिए नियम बनाने होते हैं, वे नियम भी लिखित रूप में हो ताकि प्रमाण को बताया जा सके।

ज्ञान होने पर जमीकन्द का चतुर्मास में त्याग किया जा सकता है। ज्ञान देने वाला चाहिये तो ज्ञान लेने वाला भी चाहिये। ज्ञान से आदमी बुराईयों में जाने से बच सकता है। प्रवचन से भी ज्ञान मिल सकता है। इस प्रकार हिंसा के तीन कारण हो गए- अभाव, आवेश और अज्ञान। पाप करोगे तो फल भोगना पड़ेगा, इसका ज्ञान हो जाये। हिंसा के कारणों को निरावृत्त किया जाये तो व्यक्ति पाप से बच सकता है।

'रूप रो गर्व' आख्यान के वाचन के अंतर्गत आचार्य प्रवर ने फरमाया कि से रूप के कारण चक्रवर्ती सनत्कुमार अहंकारित हो गया। बाद में रूप विकृत हुआ तो उसे वैराग्य भी आ गया। उनसे चिंतन किया कि यह शरीर क्षणभंगुर है, अब तो आत्मा को सुन्दर बनाना है। इस लिए संयम स्वीकार करना है। चक्रवर्तीत्व, नव निधि, चौदह रत्न सबको त्याग चक्रवर्ती सनत्कुमार मुनि सनत्कुमार बन गए। आगे बढ़ गये, मोह-ममता को छोड़ दिया, साधना में लग गये। अब उनका चिंतन चला कि शरीर का शोषण करना है, आत्मा का पोषण करना है। त्याग-तपस्या करते करते 16 रोगों से अतिक्रांत मुनि समता से उसे सहन करते हैं। मानो साधना से वेदना को भी पीड़ित कर दिया। देवलोक में फिर चक्रवर्ती सनत्कुमार की समता की प्रशंसा हुई। देवता वैद्य बनकर परीक्षा लेने उपस्थित होते हैं और मुनि को चिकित्सा का निवेदन करते हैं।

मंगल प्रवचन के पश्चात पूज्यवर ने तपस्वियों को प्रत्याख्यान करवाए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियां

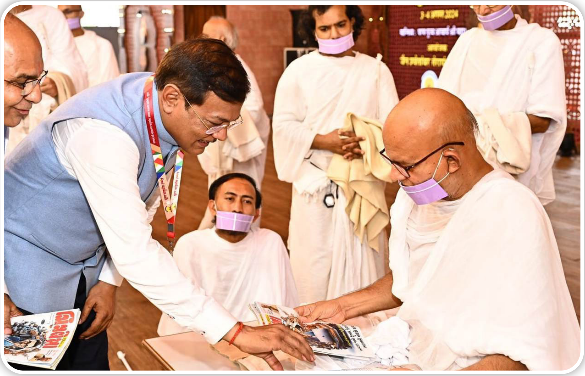

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।